SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक हिन्दी पत्रिका: 2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग-793001

नवीन पूर्वांचल संदेश
वार्षिक पत्रिका:18वां अंक
पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री केल्विन हैरिस खारशींग प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
प्रधान संपादक	:	डॉ. डी. अनिश वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
परामर्शदाता	:	श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखाधिकारी
संपादक मंडल	:	श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ
मेघालय के प्रफुल्लित कुसुम चेरी का दृश्य

नोटः पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संरक्षक अथवा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्यः राजभाषा के प्रति निष्ठा

हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

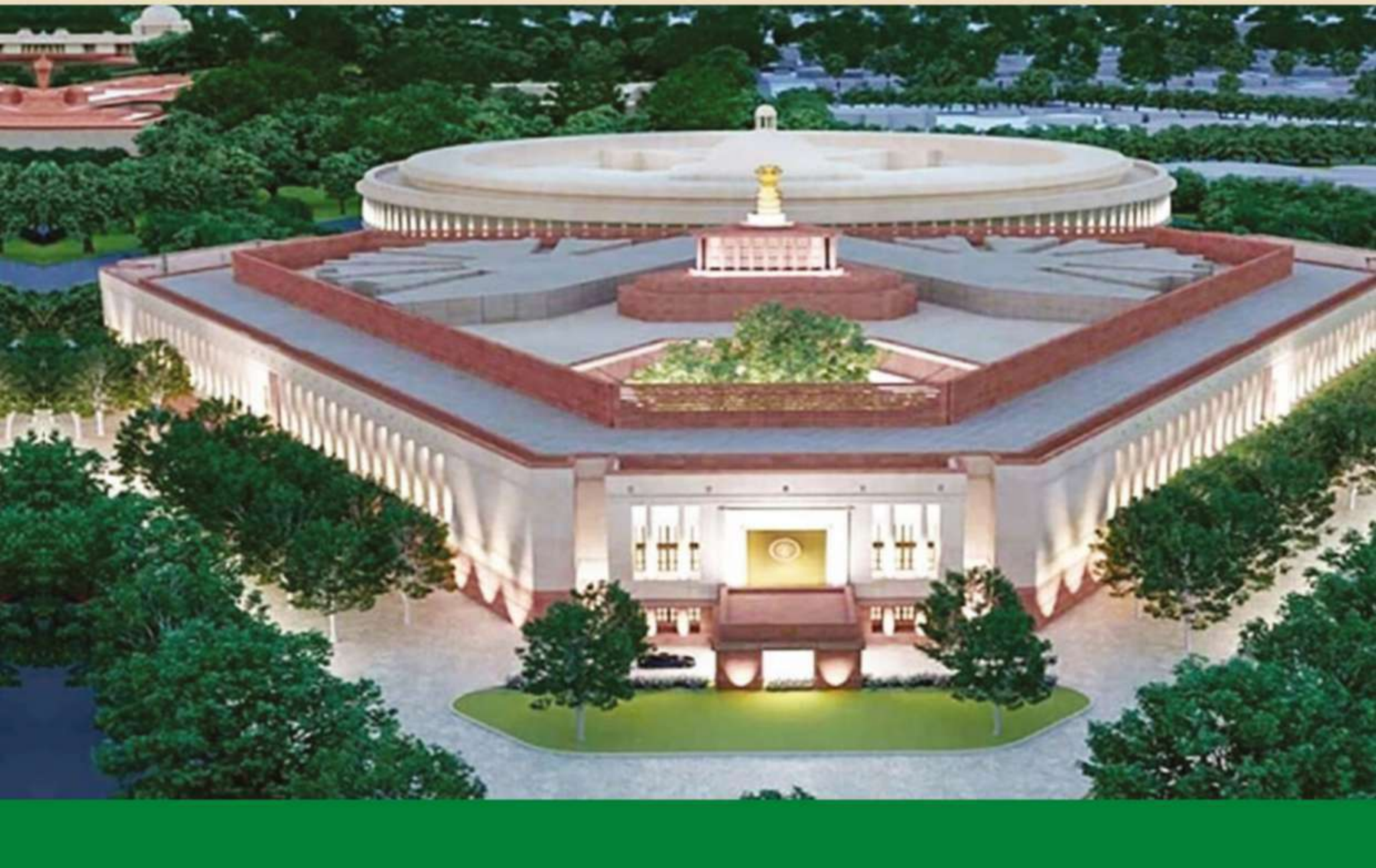

नवीन पूर्वांचल संदेश
वार्षिक पत्रिकाः18वां अंक
वर्षः 2023

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/रचना	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ
1.	स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गयी कर्मयोग की 10 शिक्षाएं-	श्री हेमलाल परियार	
2.	आओ प्रकृति से सीखो	श्री स्वास्तिक बी.रसाईली	
3.	पर उपदेश कुशल बहुतेरे	श्री अशोक कुमार	
4.	मृत्यु	श्री नीरज कुमार गुप्ता	
5.	मैं हिंदी हूँ	श्री राजु नागल	
6.	खुद की खुद से समक्ष	श्री अनीष कुमार	
7.	घर की कुछ पुरानी यादें	श्री भागीरथ प्रसाद	
8.	रोमांच की कीमत	श्रीमती रेनु नागल	
9.	कोरोना के उपरान्त प्रकृति का संदेश	श्री भागीरथ प्रसाद	
10.	कवि द्वारा पाठकों को अनुवादन	श्री अमन परियार	
11.	आत्मविश्वास	विजय कुमार	
12.	महिलाओं की स्थिति	श्री राजु नागल	
13.	क्या करूँ?	श्रीमती सबीता देवी	
14.	समय की प्रक्रिया	श्रीमती मेघारानी पत्नी	
15.	मजदूर की मजबूरी	श्रीमती रेनु नागल	
16.	भय बनाम साहस	श्री नीरज कुमार गुप्ता	
17.	पिया-प्रेंम	श्रीमती बीणा कुमारी	
18.	पति-पत्नी का रिश्ता	श्रीमती मेघारानी	
19.	मातृ भाषा	श्री विशाल छेत्री	
20.	हिंदी	श्री सुशांत बी.रसाईली	
21.	कोंगथोंग गाँवःमेघालय का एक अनूठा गाँव	श्री पार्थ ज्योति दे	

22.	बेटियाँ	श्रीमती आकांक्षा पटेल	
23.	सफल अनुवादक के लक्षण	श्री अशोक कुमार	
24.	मनभावन	श्री सिद्धार्थ कुमार	
25.	मोहब्बत-ए-नौकरी	श्री सुरेन्द्र कुमार	
26.	बूझो फिर बोलो	श्री राज्यपाल देवकोटा	
27.	दलित आंदोलन में डॉ भीमराव अंबेडकर की भूमिका	सुश्री प्रिया साव	
28.	अंतरद्वन्द	राज्य पाल देवकोटा	
29.	मन	राज्य पाल देवकोटा	
30.	बूझो फिर बोलो	श्री राज्य पाल देवकोटा,	
31.	सामाजिक अलगाव,	सुश्री ग्रेसी हातनेऊ वाईफेई	
32.	जुन बिल मेला	सुश्री स्निग्धा फुकन	

अनुमोल विचार

"एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी के बराबर होता है"

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए।"

डॉ० बाबासाहब आम्बेडकर

अगर सूरज की तरह चमकना है तो पहले सूरज की तरह जलना होगा

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"आलसी व्यक्ति के पास न तो वर्तमान होता है और न ही भविष्य।"

चाणक्य

"छोटी छोटी नदियां शोर मचाती हैं जबकि विशाल महासागर शांत रहता है"

गौतम बुद्ध

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश 'के 18वें अंक का प्रकाशन हम सबके लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है, जो आपके कर कमलों में सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है। भाषा व्यक्ति की अभिव्यक्ति संप्रेषित करने का सशक्त माध्यम होती है। भारत एक बहुभाषिक तथा विविध संस्कृति वाला देश है। हिंदी भारतवर्ष की वैभवशाली संस्कृति की वाहक है तथा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, जो देशव्यापी संचार में मदद करती है।

यह सच है कि कार्यालयों द्वारा पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है तथापि इस उद्देश्य की पूर्ति तभी संभव हो पाएगी जब अधिकाधिक अधिकारी/कर्मचारीगण पाठक एवं लेखक/रचनाकार के रूप में अपना सहयोग दें ।

पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशों, अनुदेशों का अनुपालन करते हुए अपने कार्यालयों में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रचार करना है।

अपनी संस्कृति और राष्ट्र को गौरवान्वित करने के लिए हिंदी पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं रचनाशिल्पियों, सुधी पाठकों, और संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(केल्विन हैरिस खारशींग)

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.)
मेघालय, शिलांग

संदेश

कार्यालय के समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों के भावनात्मक एवं रचनात्मक अनुभूतियों से सुसज्जित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक का प्रकाशन होने से मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। कार्यालय में काम करने लिए हिंदी का प्रयोग करना एक अलग बात है तथा पत्रिका के लिए लिखना/रचना करना, स्व-उदगारों को अभिव्यक्ति देना मानव हृदय को उजागर करता है। लेख/रचनाएं अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ भाषा में पकड़ को भी सशक्त बनाती है।

मैं पत्रिका- 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के सफल प्रकाशन हेतु उन सभी लेखकों/रचनाकारों तथा संपादक मण्डल के सदस्यों को हृदय से बधाई देता हूँ जिनके प्रयासों से इस पत्रिका का मूर्त रूप प्रदान किया जा सका है साथ ही पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

(डॉ. डी. अनिश)
वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक
'नवीन पूर्वांचल संदेश'

संपादकीय...

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 18वां अंक आपके कर कमलों में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं।

सदियों से भारतीयों को अपने संघर्ष हेतु एकजुट करने एवं प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हिंदी विश्व पटल पर अपनी महत्ता का परिचय दे रही है। अधुनातन समय में विज्ञान तकनीकि तथा सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा हिंदी माध्यम से प्रदान किए जाने से देश के ग्रामीण निर्धन वर्ग भी लाभान्वित हो रहे है। इससे पता चलता है कि हिंदी सभी क्षेत्रों में अपनी छटा बिखेरते हुए परिलक्षित हो रही है। हमारी इस पत्रिका में कुछ लेखकों एवं रचनाकारों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, फिर भी हिंदी भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ काम करते हुए न केवल वे हिंदी भाषा बोल रहें हैं बल्कि हिंदी साहित्य में भी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से लेखों एवं रचनाओँ को कलमबद्ध कर रहें है। यह पत्रिका चंपू है, जिसमें विभिन्न प्रकार के लेखों एवं रचनाओं का संकलन किया गया है, जो कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की उत्कृष्ट लेखन-कला का प्रमाण है। पत्रिका को त्रुटिरहित बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के संबंध में वे अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं।

हार्दिक शुभेच्छाओं सहित।

हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

सं- हिं. प्र/ अन्य कार्यालय /05/23-24   By Speed post
दिनांक - 24/4/23

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति)
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL RECEIPT)
ए.जी.सी.आर. भवन, इंद्रप्रस्थ ईस्टेट, नई दिल्ली-110002
A.G.C.R. BUILDING, INDRAPRASTHA ESTATE, NEW DELHI-110002

प्रशासन/राजभाषा अनुभाग

रा.भा.अ./3-18/पत्रिका समीक्षा/2023-24/33 **दिनांक: 17.04.2023**

18 APR 2023

सेवा में,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
शिलांग, मेघालय-793001

विषय: **राजभाषा पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17वें ई-संस्करण अंक की समीक्षा।**

महोदय,

पत्र सं.हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/399, दिनांक 28.12.2022 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17वें ई-संस्करण अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत मनमोहक है तथा सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। श्री नीरज कुमार गुप्ता, आंकड़ा प्रविष्टक की कविता "कलयुग", श्री पुरुषोत्तम गिरि, वरिष्ठ अनुवादक का लेख "बैंकों का बदलता स्वरूप" तथा श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक का लेख "सबरिमला" रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आपके कार्यालय की पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का यह अंक, राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में अद्वितीय है। "नवीन पूर्वांचल संदेश" की उत्तरोत्तर उन्नति हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

संजीव

हिंदी अधिकारी

हिं.प्र./अन्य कार्यालय/01.
दिनांक -3-4-23

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

Office of the Principal Accountant General (Audit-I)
Uttar Pradesh, Prayagraj

पत्रांक:प्र.म. ले. (ले. प.–I)/हिं. अनु./ 1147
दिनांक : 15/03/2023 डी आर नं. 32

सेवा मे,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग -793001

विषय : कार्यालय हिंदी ई-पत्रिका **'नवीन पूर्वांचल सन्देश '** के 17वें अंक की पावती के संबंध मे |

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल सन्देश'** के 17वें अंक प्राप्ति हुई | पत्रिका के सफल संपादन के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाई | इस पत्रिका में शामिल रचनाएँ अत्यंत उत्कृष्ट कोटि की हैं एवं पाठकों का ज्ञान वर्धन करने वाली हैं | पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु संपादक मंडल को अनंत शुभकामनायें |

यह पत्र वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन महोदय के अनुमोदन से निर्गत किया जा रहा है

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

सत्यनिष्ठा भवन, 15-ए, दयानन्द मार्ग, प्रयागराज-211001 दूरभाष : (कार्यालय) 0532 - 2420441 (का) फैक्स : 0532-2424102
Satyanishtha Bhawan, 15-A, Dayanand Marg, Prayagraj -1 Phone: 0532-2420441(O) Fax: 0532-2424102

हिं.प्र./न.पू.सं./2023
दिनांक - 20-02-2023.

कार्यालय महालेखाकार,लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT-II, WEST BENGAL

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 132 दिनांक:- 15 /02/2023

16 FEB 2023

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), मेघालय
शिलांग- 793001

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं- अंधविश्वास, कलयुग, धैर्य, पजल आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

अधिकारी
15/02/23

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. to Sr. DAG (Admn)
Date 20/2/23 163

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक. 5 वां तल, कोलकाता - 700064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064
Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

H/o स्निग्धा
20.02.23.
राजलक्ष्मी

हिं.प्र/न.पू.सं/2023
दिनांक - 10-2-23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई – 018 600

सं .प्रमले.(लेप.-II)/हिअ../प्रशंसा पत्र/7-38/2022-23/ दिनांक:03.02.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार लेखा) एवम हकदारी(
मेघालय शिलांग

विषय : हिंदी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल सन्देश" के सत्रहवाँ अंक की अभिस्वीकृति ।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय के हिंदी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल सन्देश" के सत्रहवाँ अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ ,लेख, कविताएं , प्रेरक प्रसंग इत्यादि उत्कृष्ट, पठनीय और सरल भाषा में हैं । विशेषत :" भिक्षावृत्ति", "मूस की मेहनताना", "आज अभी", "माजुली", "जनपद वैशाली" , "सफलता" आदि रचनाएँ सराहनीय है ।

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका में संकलित चित्र और इसकी साज सज्जा भी आकर्षक है।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
वीचित्रा .
हिंदी अधिकारी

विनोद 10.02.23.
ज्ञानलक्ष्मी

हिं. प्रं/न.पू.सं./23
दिनांक-08-2-23

प्रधान महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/301
दिनांक: 03.02.2023

सेवा में

वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय,
शिलांग ।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक Date 8/2/23 | 162

महोदय,

विषय : हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 17वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 28.12.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 17वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री पुरुषोतम गिरी का लेख 'बैंकों का बदलता स्वरुप', सुश्री पार्थ ज्योति दे का लेख 'भारत में रविवार की छुट्टी किसने दिलाई', श्री दीनानाथ का लेख 'स्वनामधन्य शिल्पी भारत रत्न भूपेन हजारिका', सुश्री स्निग्धा फुकन का लेख 'माजुली' एवं सुश्री राजलक्ष्मी का लेख 'सबरीमाला' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

इसके अतिरिक्त श्री भागीरथ प्रसाद की कविता 'हिंदी दिवस', सुश्री मेघा रानी की कविता 'कृष्णा', सुश्री प्रिया साव की कविता 'मीडिया' एवं श्री नीरज कुमार गुप्ता की कविता 'कलयुग' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह 6/2/2023
हिंदी अधिकारी

स्निग्धा 08.02.23
राजलक्ष्मी
8/2/23

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/2022-23/867

दिनांक:-07.02.2023

सेवा में,

वरिष्ठ उपमाहलेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
मेघालय, शिलांग-793001

विषय:- कार्यालय हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद।

अन्धविश्वास,नशामुक्त भारत, मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल, सफलता आदि लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगे। इसके अतिरिक्त कविताएँ-कलयुग,आज का इंसान, कृष्णा,हिन्दी दिवस,काफी उत्कृष्ट एवं रूचिकर लगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

हिं.प्र./न.पू.सं./23
दिनांक - 2-2-23

क्रमांकः रा.भा.अ./एच-11005/02/2022-23/24
संख्या / No.............................

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान
जनपथ, जयपुर–302005

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II) RAJASTHAN
JANPATH, JAIPUR - 302005

दिनांक/Date 12-01-2023

सेवा में,

व.उप महालेखाकार (प्राशासन),
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) का कार्यालय,
मेघालय, शिलांग-793 001

विषयः- वार्षिक पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के सतरवें अंक के संबंध में।

महोदय,

कार्यालयीन वार्षिक पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के सतरवें अंक की प्राप्ति हुई, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संग्रहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख राजभाषा संबंधित नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी तथा सहायक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. To Sr. DAG (Admn)
2/2/23 161

Phone : 0141-2385431-39 Fax : 91-141-2385230 E-mail : agauRajasthan2@cag.gov.in

File No./

हिं.प्र./न.पू.सं./23
दिनांक 24/01/23

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23 दिनांक-19.01.2023

सेवा में,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),मेघालय,
एम.जी. रोड , गवर्नर हाउस के सामने,
शिलांग -793001
ईमेल- agaemeghalaya@cag.gov.in

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक Date 24/1/23 157

विषय- हिंदी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के **17वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** का **17वाँ** अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री आनंद कौशल	म्याँव
2.	पुरुषोत्तम गिरि	बैंकों का बदलता स्वरूप
3.	श्रीमती मेघा रानी	कृष्णा
4.	श्री दीनानाथ साह	स्वनामधन्य शिल्पी भारत रत्न भूपेन हजारिका

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
कीर्ति
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

H.O. हिन्दी 24.01.23
राजभाषा व.अनुभाग
24/1/23

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफ़ोन: 044-24324530 फ़ैक्स: 044-24320562 **Website :** www.agae.tn.nic.in	सत्यमेव जयते	**INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website :** www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 60 / 46302

दिनांक 10.01.2023

सेवा में,	To,
वरिष्ठ उप महालेखाकार,	Sr. Deputy Accountant General,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),	Office of the Accountant General (A&E),
मेघालय, शिलांग - 793001	Meghalaya, Shillong - 793001

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश " के 17 वें की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का **17 वाँ अंक** प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक मे प्रकाशित **श्री नीरज कुमार गुप्ता कुमार द्वारा लिखित "कलयुग", सुश्री प्रिया साव द्वारा लिखित "अंधविश्वास", श्री राहुल ढाका द्वारा लिखित "धैर्य" और श्रीमति रानी गिरि द्वारा लिखित "भिक्षावर्ति" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

एम० सुधाकरन

(एम. सुधाकरन)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 29/11/23/158

दि.क./न.पू.सं/23-24
दिनांक - 25/01/2023

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 20/1/23/151

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/ 227
दिनांक: 04.01.2023

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय, शिलांग-793 001

विषय: कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका **'नवीन पूर्वाचल संदेश'** के 17वें अंक का ई-संस्करण के प्रेषण से संबंधित।

महोदय,

पत्र संख्या हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/1399 दिनांक 28.12.2022 के द्वारा आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वाचल संदेश' के 17वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रूचिकर एवं प्रशंसनीय हैं। 'कलयुग', 'ईश्वर आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं', 'कृष्णा', 'भिक्षावृत्ति', 'मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल' एवं 'हिन्दी: राजभाषा या राष्ट्र भाषा' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं सराहनीय हैं। सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

19/1/23
H/o
हिन्दी
20.01.23
राजलक्ष्मी
व.अ.

हि.उ/ अ. कार्यालय/ 69

दिनांक- 20.01.23

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 20/1/23 | 153

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/ 227
दिनांक: 04.01.2023

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी),
मेघालय, शिलांग-793 001

विषय: कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वाचल संदेश' के 17वें अंक का ई-संस्करण के प्रेषण से संबंधित।

महोदय,

पत्र संख्या हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/1399 दिनांक 28.12.2022 के द्वारा आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वाचल संदेश' के 17वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रूचिकर एवं प्रशंसनीय हैं। 'कलयुग', 'ईश्वर आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं', 'कृष्णा', 'भिक्षावृत्ति', 'मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल' एवं 'हिन्दी: राजभाषा या राष्ट्र भाषा' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं सराहनीय हैं। सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

H.O
प्रियंका
20.01.23

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

19/1

राजलक्ष्मी
व.अ.

हि.प्र/अ. कार्यालय/68 दिनांक - 20.01.23

From: "MOUSUMI CHOUDHARY" <mousumic.asm.au@cag.gov.in>
To: "AGAE MEGHALAYA" <agaemeghalaya@cag.gov.in>
Sent: Wednesday, January 4, 2023 12:35:37 PM
Subject: हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक के ई- संस्करण की पावती।

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
मेघालय, शिलांग-793 001

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक के ई- संस्करण की पावती।

महोदया/महोदय,

आपके द्वारा प्रषित हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक के ई- संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, जिनमें 'अंधविश्वास', 'आज अभी', 'माजुली', एवं 'बैंकों का बदलता स्वरूप' विशेष रूप से सराहनीय रचनाएँ है।

आशा है कि पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार के साथ- साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), असम

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 20/1/23/150

19/1/23

20.01.23

राजलक्ष्मी
व. अनुवादक

1760

कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0) उत्तराखण्ड

"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक:26 / हि0प्र0 / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 775 दिनांक 19.01.2023

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग – 793001

विषयः–हिन्दी गृह–पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह–पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" का 17 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

19/01/23
हिन्दी अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 20/1/23 156

File No..//22/2022-23

<u>कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र,नागपुर 440001</u>

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2022-23/जा.क्र.......

दिनांक: - /01/2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

विषय:- हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वाञ्चल संदेश" के 17 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वाञ्चल संदेश" के 17 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री प्रिया साव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक का लेख "अंधविश्वास",श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक का लेख "ईश्वर आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं" तथा श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी का लेख "माजुली" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

WASIM MINHAS, HO(AMG-I HINDI CELL)-WM, HINDI CELL

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

स्निग्धा
18.01.23.
राजलक्ष्मी
व. अनुवादक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2. गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/351
दिनांक:05.01.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय
शिलांग – 793 001

विषय : कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांक:हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/399, दिनांक:28.12.2022 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा अति प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठणीय एवं रोचक है। धैर्य, नशा मुक्त भारत, बैंकों का बदलता स्वरूप, माजुली, मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल, राजनीतिक वादे इत्यादि रचनाएं पठणीय एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

05/01/23
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

स्निग्धा
18.01.23

राजलक्ष्मी
व अनुवादक

स्पीड पोस्ट

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
रेस कोर्स रोड, गुजरात, राजकोट
Race course Road, Gujarat, Rajkot-360001

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/135
दिनांक:06-01-2023

सेवा में,
मा. व.उप महालेखाकार/ प्रशासन,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय, शिलांग-793001

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 17 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर पृष्ठभूमि में दिखाया गया फूलों का चित्र और अंतिम पृष्ठ पर ओंस की बूंदों से भीगे हुए पौधे का छायाचित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका के मुख पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ को सुंदर एवं आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका में बाल कलाकारों द्वारा बनाई गई चित्रकारियों के चित्र बहुत ही सुंदर है, तथा सुनहरे भविष्य के लिए उन्हे बहुत-बहुत शुभकामनाएं। पत्रिका के माध्यम से "ग" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान भी बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका में, कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सचिव
P.A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक/Date 13/1/23/198

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

Email

AGAE MEGHALAYA

Re: [Cag-all-users] कार्यालय हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक का ई- संस्करण के प्रेषण से संबंधित।

From : VISHESH BISWAL <visheshb.pjb.au@cag.gov.in>

Thu, Jan 05, 2023 04:39 PM

Subject : Re: [Cag-all-users] कार्यालय हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17 वें अंक का ई- संस्करण के प्रेषण से संबंधित।

To : AGAE MEGHALAYA <agaemeghalaya@cag.gov.in>

आदरणीय महोदय,

पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" कि प्रस्तुति अति सुंदर है।
सभी रचनाएँ सुंदर हैं। हिंदी अधिकारी एवम्, संपादक जी के प्रयास को साधुवाद।
महालेखाकार महोदय जी के संरक्षण में पत्रिका और सुंदर हो, ऐसी कामना करते हैं।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date 6/1/23/ 197

भवदीय

विशेष बिस्वाल
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

On 2 Jan 2023 11:58 am, AGAE MEGHALAYA <agaemeghalaya@cag.gov.in> wrote:

महोदय/ महोदया,
कृपया उपरोक्त विषय पर संलग्नक पत्र अवलोकन करें।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

हिंदी प्रकोष्ठ ... 06/01/23
13

Azadi Ka Amrit Mahotsav — G20 वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH · ONE FAMILY · ONE FUTURE

Azadi Ka Amrit Mahotsav — G20 वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH · ONE FAMILY · ONE FUTURE

H.O. स्निग्धा 06.01.23.

राजलक्ष्मी

6/1/23

स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गयी कर्मयोग की 10 शिक्षाएं-

श्री हेमलाल परियार, ,
लेखाकार

1- हमारा लक्ष्य ज्ञान है, सुख नहीं। कर्मयोग में कर्म का अर्थ केवल कार्य है, सत्य का ज्ञान मनुष्य जाति का ध्येय है, इसी लक्ष्य को प्राच्य दर्शन हमारे सामने रखते है । मनुष्य का ध्येय ज्ञान है, सुख नहीं। इसीलिए, प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति में ज्ञान प्रदान एवं ज्ञान-धारक को उच्च स्थान दिया गया है।

2- दुःख ने सुख से अधिक शिक्षा दीः संसार के बड़े-बड़े महापुरूषों के चरित्रों का अध्ययन करने से पता चलता है कि दुःख ने सुख से अधिक शिक्षा दी, धन से अधिक निर्धनता ने उन्हें महत्ता प्रदान की है। प्रशंसा नहीं अपितु निंदा के प्रहार सहकर उनकी अन्तः ज्योति का जागरण हुआ। इसलिए जीवन में दुःख के आगमन से निराशा न होकर इसे एक शिक्षा प्राप्त करने एवं अन्तर ज्योति के जागरण की तरह एक अवसर के रूप में देखना चाहिए।

3- कर्म को महत्वः मनुष्य को छोटे-छोटे काम करते देखिए। यह एक महापुरूष का सच्चा चरित्र है। समय आने पर छोटे-छोटे मनुष्य में भी बड़प्पन आ सकता है। चरित्र निर्माण में कर्म ही सबसे बड़ी शक्ति है।

4- खुद पर विश्वास तभी विकासः जीवन में कुछ करने के लिए स्वयं पर विश्वास का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस मनुस्य में आत्मविश्वास नही होगा, उसका किया कार्य और लिए गए निर्णय में खास बात नही होगी। जीवन में सफलता के लिए आत्म विश्वास होना बहुत महत्वपूर्ण है।

5- दूसरों से तुलना न करेः "अमरूद के पेंड़ से बबूल के गुणों की परख नहीं की जानी चाहिए"। इस सांसारिक दुनिया में सब अपनी पीड़ा और सुख का भोग कर रहे हैं। दूसरों से तुलना करने पर एक मनुष्य स्वयं अंदर से खोखला एवं दुःखी होता जाता है।

6- माता-पिता का सर्वोच्च स्थानः माता-पिता को ईश्वर का साक्षात प्रतिनिधि जानकर गृहस्थों को सदा उन्हें प्रसन्न रखना चाहिए। यदि माता-पिता उससे प्रसन्न है, तो ईश्वर भी उससे प्रसन्न है। हमारी संस्कृति में भी यह कथन मान्य है कि माता-पिता का सर्वोच्च स्थान है। जीवन में जितने भी सफल हो जाऔ किन्तु माता-पिता का सम्मान में कोई कटौती न होने देना ही एक सपूत होने का प्रमाण है।

7- ज्ञान दान सर्वोच्च दानः ज्ञानदान, वस्त्र, भोजन आदि दान से बढ़कर है यह जीवन दान से भी श्रेष्ठ है क्योंकि मनुष्य के वास्तविक जीवन का अर्थ है, सदज्ञान । अज्ञान को मृत्यु और ज्ञान को जीवन कहा गया है।

8- निस्वार्थ कर्मः आसक्ति वही होती है कृत कर्म के लिए, हम बदले में कुछ चाहते हैं "जिस प्रकार जल से कमल नहीं भीगता, उसी प्रकार नि:स्वार्थ पुरूष कर्म-फल की प्रत्याशा नहीं करता।" अनासक्त और स्वार्थहीन मनुष्य किसी भी पापपूर्ण नगर में प्रवेश करें परन्तु पाप की छाया उसे छू न सकेगी। यह वाक्य हमारे उपनिषद श्रीमद् भागवतगीता में भी कहा गया है कि "हमें निस्वार्थ भाव से कर्म कर फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए।"

9- दूसरों को अपनी नजरों से न देखेः मेरा आदर्श संसार का आदर्श नहीं, मुझे संसार में अनुकूल रहना है, ना कि संसार को मेरे अनुकूल हमें इस बात का सदैव स्मरण रखना चाहिए कि दूसरों के कर्म को हम उन्हीं के दृष्टकोण से देखें।

10-धन से ज्यादा चरित्र को महत्वः मनुष्य चार पैसे के पीछे अंधा बना फिरता है और उन्हें क्षुद्र चार पैसों के लिए अपने भाई को धोखा देने में तनिक भी पीछे नहीं हटता। परन्तु वे धैर्य धारण करें तो वे ऐसा चरित्र बना सकता है कि इच्छा बना सकता है कि इच्छा करने पर करोड़ो को अपने पास बुला सकता है। अर्थात चरित्र निर्माण को धन की इच्छा से अधिक महत्व दिया गया है।

कवि द्वारा पाठकों को अनुवादन

श्री अमन परियार
सुपुत्रः श्री हेमलाल परियार, लेखाकार

प्रस्तुत कविता उन सभी नौजवानों को समर्पित करते हुए लिखा गया है, जो अपने जीवन में कुछ बन जाने एवं कुछ करने की धारणा लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। कविता में, मैंने पाठकों को प्रोत्साहित करते हुए एकबार असफल होने पर भी हिम्मत न हारने को कह रहा हूँ। पाठक को समझने में सरलता के लिए मैंने आधुनिक दैनिक जीवन की भाषा शैली का प्रयोग किया है।

"मैं हारा नहीं हूँ, मैं बस थोड़ा रूका हुआ हूँ"
मैं हारा नहीं हूँ, मैं बस थोड़ा रूका हुआ हूँ,
आगे जाने की तमन्ना में, हालातों का जायजा ले रहा हूँ।
कभी जीवन के उतार-चढ़ाव, तो कभी इसके चमाटे सह रहा हूँ,
लेकिन मन में यह बोलकर एकटक देख रहा हूँ कि,
मैं हारा नहीं हूँ, मैं बस थोड़ा रूका हुआ हूँ।
बिन बोले लोगों के मुखौटे उतरते देख रहा हूँ,
फिर थोड़ा रूककर अपनी सोच को, खुद ही मुस्करा रहा हूँ।
हां कहने को सभी साथ है ,किन्तु युद्ध मैं अकेले लड़ रहा हूँ,
जहां प्रतिध्वनि में, मैं अपने ही प्रतिबिंब को देख रहा हूँ,
लेकिन मैं अभी हारा नहीं, बस थोड़ा रूका हूँ।
सहनशीलता की कोई सीमा नहीं,
कभी खुद के सपने कुचले तो कभी उसी के गम का शोक मना रहा हूँ,
और कभी खुद से जीत न पाने की निराशा में खुद पर दबाव बना रहा हूँ।
किन्तु सभी परेशानियों के बीच, 'मैं जीतूंगा' की मन में आवाज लिए,
मैं फिर उठ खड़ा हूँ, ।
तभी जाकर आज यह समझ आया कि मैं हारा नहीं थोड़ा थकावट मिटा रहा हूँ,
आएगा वो सूरज जिस दिन मैं चमकूंगा, बस उसी ओर चल रहा हूँ।
किसी को साबित करने के लिए नहीं, खुद की जंग में अपना वजूद बना रहा हूँ,
हाँ, मैं हारा नहीं, बस थोड़ा रूका हुआ हूँ ।

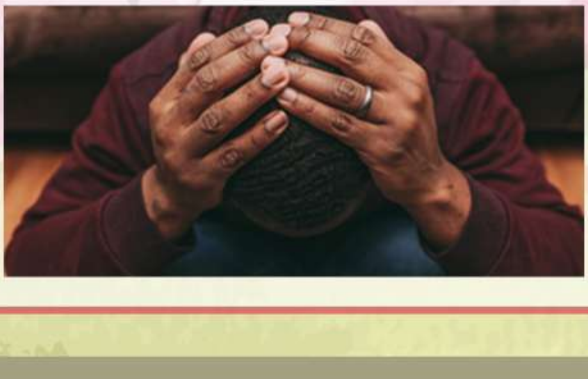

“मृत्यु”

श्री नीरज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ.

छल हो-कपट हो, द्वेष-ईर्ष्य विभट हो,
जाता न कोई उस पार है।
लेकर कुछ न जा सके, खोकर फिर न पा सके,
दैहिक सीमाओं का परम सत्य सार है।

जीव का चक्र है ये, शिव का फक्र है ये,
भ्रम का न निहित इसमें, कोई भी सवाल है।
शेर की दहाड़ है ये, अंत की पुकार है ये,
श्रृष्टि के सुर में बसी अंतिम मधुर ताल है।

लोभ-मोह-भाव हो, या दु:ख का कोई घाव हो,
जीवन के कुल-कष्टों का करती ये संघार है।
जीता हो कोई इससे, मिलते कहाँ ऐसे किस्से,
सब पर करती ये अमोघ-अचूक प्रहार है।

सत्य की जुबान है ये, अंत का प्राण है ये,
रूह को मृत्यु द्वारा पुनर्जन्म उपहार है।
मृत्यु तो निश्चल है, संदेह न किंचित है,
जीवन का मृत्यु से यही अटल-अमर करार है।

जाता न उस पार है, परम-सत्य सार है,
भ्रम का न सवाल है, अंतिम मधुर ताल है।
कष्टों का संहार है, अमोघ-अचूक प्रहार है,
पुनर्जन्म का उपहार है, अटल-अमर करार है।

रोमांच की कीमत

श्रीमती रेनु नागल,
पत्नी श्री राजू नागल
डी.ई.ओ.

किसी शायर ने क्या खूब कहा है कि –

"हम क्या कहें अहबाब, क्या कार-ए-नुमायाँ कर गए,
बी-ए हुए, नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गए ।"

इन पंक्तियों को पढ़कर अहसास होता है कि 18 जून 2023 को हुई एक घटना ने स्पष्ट कर दिया कि जिंदगी में रोमांच होना चाहिए। हमने जन्म लिया, पढ़ाई की, नौकरी की, पैसे कमाए और इतने पैसे कमाएं कि अपनी सभी भौतिक इच्छाओं को पूरा कर लिया, कर लिया सब कुछ अब क्या करें, 2 करोड़ की एक सीट, 5 अरबपतियों द्वारा टाईटन नामक पनडुब्बी में बैठकर समुद्र में डूबे हुए टाइटैनिक जहाज को देख के आने की इच्छा जो कि 1912 में मध्य अटलांटिक महासागर में डूब गया था। अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्या जिज्ञासा रही होगी समुद्र तल में जाने की जिसकी कीमत केवल 12 करोड़ नहीं थी। 5 व्यक्तियों की जान भी थी। ऐसी जिंदगी जीना जिसमें मौत का डर जरा भी ना हो, असल जिंदगी है।

"जिस इंसान में मस्ती जिंदा है, उस इंसान की हस्ती जिंदा है,
और जिस इंसान में मस्ती नहीं है, ऐसा समझो वो इंसान जबरदस्ती जिंदा है।"

मैं हिंदी हूँ

श्री राजू नागल
डी.ई.ओ.

आज हिंदी भाषा के बढ़ते प्रयोग से हिंदी भाषा की महत्ता को पहचाना जा सकता है। हिंदी भाषा का अपना एक इतिहास रहा है। जहां समय समय पर भारत के अनेक हिस्सो से इसका समर्थन भी किया जाता है और इसके प्रयोग को लेकर समय समय पर हमें मतभेद भी देखने को मिले हैं।

जहां हिंदी भाषा का नाम आता है, वहीं हमारे मस्तिष्क में हिंदी शब्दों का सही उच्चारण एवं सही वाक्य का होना जैसी स्थिति बन जाती है। वो आइए जानने का प्रयास करते हैं कि क्या वास्तव में एक व्यक्ति को अपने आप को हिंदी भाषी कहना सच में हिंदी के भी शब्दों का प्रयोग करता है।

(हिंदी, उर्दू, अरबी, फारसी)

आपको सुनकर हैरानी होगी कि भारत में हिंदी भाषा का प्रयोग करने वालों द्वारा हिंदी भाषा के माध्यम से अनेक शब्द जो कि उर्दू, अरबी और फारसी भाषा के हैं, उनका सामान्य हिंदी बोलने में प्रयोग किया जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि उर्दू और हिंदी दोनों खड़ी बोली से विकसित हुई है। इसलिए दोनों में कई समानता है। उर्दू में अरबी और फारसी भाषाओं के शब्द ज्यादा है जहां हम एक साधारण से हिंदी वाक्य का इस्तेमाल करते हैं।

"ज्यादातर जानवर शिकार करके अपना पेट भरते हैं"

उपरोक्त वाक्य में शब्द " ज्यादातर,""जानवर," और शिकार उर्दू भाषा के शब्द है। जिन शब्दों के नीचे नुक्ता(बिंदी) लगी हो वे उर्दू के शब्द होते हैं और हिंदी वर्ण क,ख,ग, ज, फ सिर्फ अरबी शब्दों में आते हैं। अरबी फारसी के कुछ शब्द हिंदी की प्रवृत्ति के अनुसार ढल गए हैं जैसे फस्ल-फसल, शुरू, जानवर, चीज, जानदार, दुनिया, सिर्फ, अगर, वजह, जरूर, जमाना, जमीन, जिंदा मुश्किल, आसान, बर्फ, पैदा, बाज, ताकतवर, मालूम, फायदा, नमूना, तरफ, आदमी, मालिक आदि। उर्दू भाषा के शब्द है जो रोज की बोलचाल में हिंदी भाषा में इस्तेमाल किये जाते हैं।

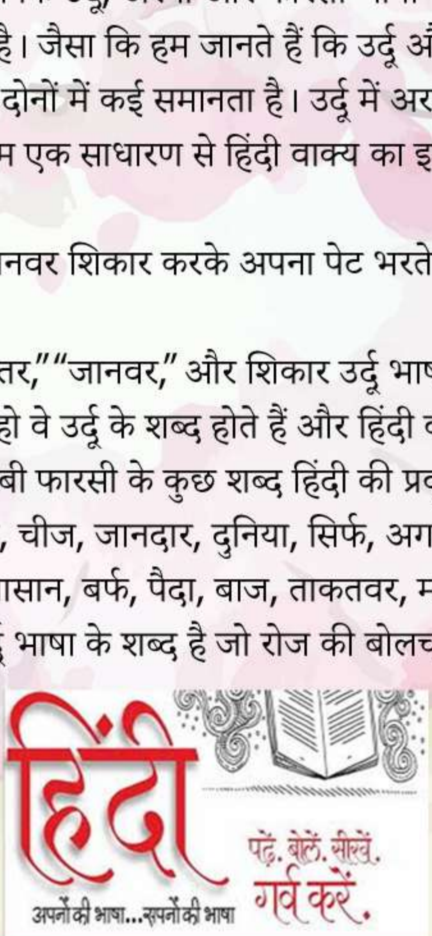

“भय बनाम साहस”

श्री नीरज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ.

भय अनीति से जन्मी विचार है,
साहस पर प्रतिक्षण करती प्रहार है।
बढ़ते कदमों को जो बांध दे जोर से,
ऐसी अश्रवणीय इसकी पुकार है।
भय कु-कृत्यों की पहचान है,
पतन-विनाश का प्रमाण है।
जहां रूह को मृत्यु मिले,
अदृश्य ऐसा शमशान है॥
चिंतन की मशाल है,
स्वार्थ का सवाल।
भविष्य का मलाल है,
कलंक का गुलाल है।
अभिशाप है, पाप है, श्राप है,
विष-घुलित जीवन का ये साँप हैं।
अभिशाप है, पाप है, श्राप है,
स्वार्थपूर्ण मंसूबों की ये माप है।

साहस भय का एक उपचार है,
जिसके समक्ष भय स्वयं लाचार है।
बंधे कदमों को भी जो खोल दे,
ऐसी प्रबल इसकी दहाड़ है।
यह निर्भय-चित की पहचान है,
पराधीनता का प्रखर अपमान है।
जो जीवन को भय से मुक्त करें,
साहस उसी का तो नाम है॥
डमरू की डंकार है,
तबले की ये ताल है।
मृदंग की झंकार है,
बिजली की हुंकार है।
आन है, शान है, मान है,
विजय-श्री के मार्ग का गुमान है।
आन है,शान है, मान है,
ऐतिहासिक पन्नों पर छुपी गुणगान है।

खुद की खुद से समझ

श्री अनीष कुमार
सुपुत्रः श्री नवल किशोर, एम.टी.एस

चेहरा बहुत कुछ बताता है, जुबान बिना,
खामोशी बहुत शोर करता है, आवाज बिना।
जैसे बिन शीशा के, खुद को पहचानना मुश्किल है,
अकेले रहे बिना, खुद को जानना असंभव है।

अगर रास्ता पता हो तो गुम हो जाओंगे,
और न पता हो तो मंजिल तक पहुंच जाओगे।
और कोई खोजता, पाने के लिए,
लेकिन मैं खोजता जब, खो जाता हूँ।

नफरत वो कर सकता है, जिसे महत्व नहीं प्यार का,
कर सकता प्यार वो, जिसे पता हो महत्व किसी और का।

क्या करूँ

श्रीमती सबीता देवी
पत्नीः श्री नवल किशोर, एम.टी.एस.

मालूम नहीं क्या करूँ, इसका मतलब यह नहीं, करूंगा नहीं,
कहते हैं कि सुनता नहीं, क्योंकि जानना चाहता हूँ।
करना क्या चाहता हूँ, ?
क्या करूं क्या करूँ, सोचता दिन रात नहीं हूँ, मैं क्या करूं ?
जो बोलते हैं, जो दिखते हैं, क्या यही करना चाहता हूँ।
सोचता रहता हूँ, करना क्या चाहता हूँ ?,
सवाल में उलझ सा जाता हूँ।
जवाब खोजने किधर-किधर जाता हूँ,
जिनको था मैं मानता सबसे पास, वो ही था सबसे दूर।
दूर होकर आने लगा हूँ, किसी के पास,
जो खो गया था फिर मैं उसे पाकर शायद होगी कोई आस।

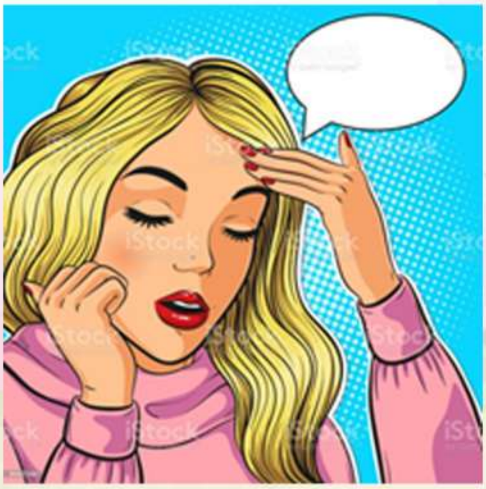

पिया प्रेम

बीना कुमारी राय
पत्नी श्री विजय कुमारी राय, लेखाकार

पिया का संग आएगा,
जीवन को नया रंग लाएगा।
प्रेम की होती नित बरसात,
सुख में बीतेगी दिन और रात।

अल्हड़ सी लड़की जब शादी करके,
पराये घर जाती है।
जाने कितने सपने,
आँखों मं सजाके लाती है॥

पर चार दिन होते है सुख के,
फिर मिलता है घर संसार।
रोज होती है नयी परीक्षा,
कमिया खामियाँ गिने हजार।

करते करते थक जाए मन,
पर काम न हो उसके खतम।
पिया का संग क्या लाये रंग,
जब चूर चूर होवे बदन।

आत्म विश्वास

श्री विजय कुमार , स.ले.अ.

न बनो, जल की मीन तुम,
बदले पानी मर जाती है।
नया साथी देखकर,
जी नहीं वो पाती है।

हर नया पल जीवन में,
बदलाव को दर्शाता है।
परिस्थिति हो चाहे जैसी,
सामंजस्य और आत्म विश्वास ही-पार लगा पाता है॥

आचार-व्यवहार हो बाज का,
कम उम्र अंगो को खो जाता है।
करता चुनाव न घुट-घुट मरने का,
कठिन निर्णय पर आता है।

असहनीय पीड़ा सहकर,
अंग नए वो पा जाता है।
मनोवृत्ति बस यही बाज,
पक्षियों का राजा कहलाता है॥

बाद हर अंधेरी रात के,
नयी सुबह भी आएगी।
आत्म विश्वास हो खुद पर,
परिस्थिति बदल ही जाएगी।

मातृ भाषा

श्री विशाल छेत्री
सुपुत्रः श्री गोपाल छेत्री, ड्राइवर

हिंदी की ध्वजा ऊंची लहराएं,
मातृभाषा की शोभा दुनिया में छाएं।
मिलते हैं विभिन्न रंग इसमें,
भावों के समंदर, का जहाज यह बनाएं।
विरह, मिलन, प्रेम के सभी रंग,
हिंदी की बोली है, सबसे अमृत संग।
इसकी सुन्दरता को न कोई वर्णन कर सकता,
विश्व में एक अनमोल, रत्न, खास भाषा है जिंदगी हमारी।
संस्कृति, सभ्यता का प्रतीक है यह,
विश्वभर में लोकप्रिय भाषा है यह,
हर हृदय से मिलती यह ध्वनि,
हिंदी की महिमा गूंजे यह धरती अपार यह धरती।
हिंदी के मंत्र मंथन से,
आओ बढ़ाएं इसके गौरव को नई ऊंचाइयों तक,
भाषा की मिठास, लजीज बोल,
कविताएं की गाथा जीवन की खोज।
विरह, मिलन, प्रेम के सभी रंग,
हिंदी की बोली है सबसे अमृत संग।
इसकी सुन्दरता को न कोई वर्णन कर सकता है,
विश्व में एक अनमोल रत्न, खास भाषा है हिंदी हमारी।
संस्कृति सभ्यता का प्रतीक है यह,
विश्वभर में लोकप्रिय भाषा है यह।
हर हृदय से मिलती यह ध्वनि,
हिंदी की महिमा गुंज यह धरती अपार यह धरती।
आओ मिलकर मनाएं हिंदी का त्योहार,
हिंदी दिवस की बधाई सबको प्यारी भाषा के प्रति।

पति-पत्नी का रिश्ता

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी-श्री भागीरथ प्रसाद, डी.ई.ओ.

वह पत्नी है हर सुख दुख में साथ रहेगी वह,
वह पत्नी है परवाह करेगी तो डांटने का भी हक रखती है वह।
वह पत्नी है जो सिर्फ शर्ट के बटन नहीं सुधारती,
वह सुधार लेती है तुम्हारा जीवन भी ।
वह पत्नी है जो जानना चाहती है दुख दर्द तकलीफ सब कुछ,
जो तुम आसानी से छुपा लेते हो।
बात करके देखो उससे कभी,
कंधे में सिर रखकर बैठो उसके।
तुम समझ जाओगे उसके साथ होने का एहसास सुकून का अहसास,
वह तुमसे महंगे तोहफे नहीं मांगती।
पर वह चाहती है तुम्हारा थोड़ा वक्त,
यह जिम्मेदारी रिश्ते में वक्त देकर भी संभाली जा सकती है,
हां उसे नहीं आता कहना, वह खुद की परेशानी नहीं कह पाती है।
वह चाहती है तुम्हारा साथ पर शिकायत शायद वो करना ही भूल जाती है,
उस वक्त तुम्हें थोड़ा समझदारी दिखाना होगा।
स्त्री मन समझना इतना भी कठिन नहीं है,
बस उसे प्यार से अपना मानना होगा।
तुम समझना उसके खामोशी में छुपा दर्द,
तुम समझना कभी उसके गुस्से में छिपी परवाह।
तुम समझना उसे और बस, खामोशी से गले लगा लेना,
दिन भर में दो पल ही सही उससे बात कर लेना,
उसके मन में है सच्चा प्रेम तभी वह तुम्हारे साथ है,
रिश्ते वक्त के साथ कमजोर नहीं पढ़ना चाहिए I

घर की कुछ पुरानी यादें

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी-श्री भागीरथ प्रसाद, स.ले.अ..

जब दिल में कुछ जज्बात जगे,
अध- जगी रात में ख्वाब जगे।
जब आंखे नम महसूस हुई,
हम तन्हाई के साथ जगे।

वह रात कहीं फिर सुबह हुई,
अगले दिन सूरज भी मुझको,
बिल्कुल लगा पराया था।
तब घर बहुत याद आया था।

जब जगमग जगमग आसमां भी,
सूनी सूनी महसूस हुई।
जब तारों वाली रात हमें,
खाली-खाली महसूस हुई।

अब सुबह देर से आंख खुले तो,
उनको डांट नहीं पड़ती अब।
जैसा जो करना हो कर लो,
अपनी मन की है चलती।

अब इस आजादी का कोई,
मतलब नहीं रह जाता है।
तब घर बहुत याद आता है,
तब घर बहुत याद आता है।

कोरोना के उपरांत प्रकृति का संदेश

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी-श्री भागीरथ प्रसाद, स.ले.अ.

बदल गयी तस्वीर जहां की,
सुंदर सा यह दृश्य बना I
संदेश अब यह फैल चुका है,
झूम उठा पेड़ पौधे का तना I

फैल रहा था खूब प्रदूषण,
जंगल के कट जाने से I
खुशियां छाई होगी वन में,
मानव के छिप जाने से I

कहता था कि तुम ना छेड़ो,
ना प्रकृति का नाश करो I
उल्टा छड़ी ये घूम चुका है,
मानव अब अपना विनाश सहो I

समय की प्रक्रिया

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी-श्री भागीरथ प्रसाद, स.ले.अ.

हर एक चीज समय एवं परिस्थिति पर निर्भर करती है I कोई व्यक्ति 22 साल की उम्र में ग्रेजुएट होता है और उसे एक सिक्योर जॉब पाने के लिए 5 साल तक वेट करना पड़ता है I वही कोई व्यक्ति 23 साल की उम्र में ही 500 करोड़ के टर्नओवर वाली कंपनी का मालिक बन जाता है I यह उस व्यक्ति के लगातार दिन-रात मेहनत करने का परिणाम होता है I यह कहानी 23 साल के निधि गुप्ता की है I निधि गुप्ता की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह सेल्फमेड करोड़पति है I यह रेंज पावर एक्सपर्ट सौर ऊर्जा कंपनी की मालकिन है इन्होंने यह कंपनी अपने भाई के साथ मिलकर मात्र ₹1,37,000 की मामूली पूंजी के साथ शुरुआत की थी I

आमतौर पर 50 साल की उम्र में जब लोग पेंशन और रिटायर्ड लाइफ पेंशन के बारे में सोचने लगते हैं तब फाल्गुनी नायर ने इन्वेस्टमेंट बैंकर की जॉब छोड़ कर अपना उद्भव शुरू करने का फैसला किया I इन्होंने स्टार्ट अप 'नायका' की शुरुआत सन 2012 ईस्वी में की थी I नायका ने अपना पहला फिजिकल स्टोर सन 2014 में शुरू किया था I 31 अगस्त 2021 तक देश के 40 शहरों में 80 से भी ज्यादा इसके फिजिकल स्टोर उपलब्ध है I नायका के फाउंडर फाल्गुनी नायर आज विश्व की जानी-मानी हस्तियों/ करोड़पतियों में से एक हैI

जहां बराक ओबामा ने 53 साल की उम्र में ही राष्ट्रपति पद से रिटायरमेंट ले लिया था, वही डोनाल्ड ट्रंप ने 70 वर्ष की उम्र में अपनी शुरुआत की थी I बराक ओबामा संयुक्त राज्य अमेरिका के 44 वें राष्ट्रपति थे, उनका कार्यकाल 20 जनवरी 2009 से 20 जनवरी 2017 तक रहा I इन्हें सन 2009 में शांति का नोबेल पुरस्कार भी मिला था I वही डोनाल्ड ट्रंप 70 वर्ष की उम्र में संयुक्त राज्य अमेरिका के 45 वें राष्ट्रपति बने थे I डोनाल्ड ट्रंप की संपत्ति लगभग 400 करोड़ डॉलर है I

इस दुनिया में हर इंसान अपने अपने टाइम जोन के हिसाब से चल रहा है I आपके आसपास में कई लोग होंगे जो आप से आगे हैं तो कई होंगे जो आपके पीछे I सच्चाई यह है की हर कोई अपनी रेस में दौड़ रहा है I उनसे अपनी तुलना मत कीजिए I आप अपने हिसाब से एकदम सही समय पर हैं, तो फालतू का तनाव लेकर अपनी वर्तमान समय को बेकार मत कीजिए I जिंदगी के प्रोसेस पर और खुद पर भरोसा कीजिए और आगे बढ़ते रहिए l

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

अन्य लोगों को ज्ञान और उपदेश देना बहुत ही सरल है पर उस उपदेश को स्वयं पर अमल करना दुष्कर है। यह लोगों की सामान्य प्रवृत्ति होती है कि जब भी हम जाने-पहचाने, सगे-संबंधियों, दोस्तों और अपने सहकर्मियों आदि से मिलते हैं तथा बातें करते करते हम अनाश्वयक रूप से उनको उपदेश देने का प्रयास करतें है । अहंकार के मद में चूर होकर हम अपने को सामने वाले को कमतर आंकने लगते हैं और उसे ज्ञानोपदेश प्रदान करने लगते हैं। लेकिन उन्हे शायद यह नही भान होता है कि ऐसे उपदेशों का प्रभाव तभी पड़ता है, जब व्यक्ति स्वयं भी उनका पालन करता हो।

इसीलिए तुलसीदास ने रामचरितमानस में बहुत ही व्यावहारिक बात लिखी है-

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
जे आचरहिं ते नर न घनेरे।"

दूसरों को उपदेश देकर हम अपने को श्रेष्ठ समझ कर उनके ऊपर धाक जमाकर स्वयं के अहम को संतुष्ट करने में लगे रहते हैं।

जो जितना खोखला या अल्पज्ञानी होगा वो उतना ही ज्ञान की बात करता है। ठीक इसी प्रकार अंग्रेजी में कहावत है कि-

"Empty vessel makes much noise."

"थोथा चना बाजे घना"

प्रभाव उपदेश का नहीं बल्कि आचरण का होता है जिस प्रकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने स्वयं कार्य करके उपदेश रूपी आदर्श प्रस्तुत किया है।

आचरण की भाषा शब्द रहित होती है, आचरणशील व्यक्ति बातों से नहीं अपने कर्मों एवं सदाचार के द्वारा दूसरों को प्रभावित करता है। सदाचरण बिना कुछ कहे भी बहुत कुछ कह देता है। इसीलिए सरदार पूर्ण सिंह ने कहा है-

"आचरण की भाषा शब्दरहित होती है"

यदि कोई शिक्षक सच्चरित्र है, पक्षपात रहित है, नैतिक मूल्यों का पक्षधर है, तो वह अपने इस आचरण से अपने शिक्षार्थियों को जितना प्रभावित करेगा उतना लम्बे चौड़े भाषणों से नहीं।

ढोंग तथा आडम्बर से समाज में मिथ्याचार पनपता है इससे समाज का कल्याण नहीं हो सकता। जब तक समाज में महात्मा बुद्ध, विवेकानंद, महात्मा गांधी, महावीर स्वामी जैसे महान महापुरूष नहीं होगें तब तक कथनी और करनी में तथा आचरण में एकरूपता नहीं आएगी क्योंकि इन महापुरूषों ने अपने आचरण का उदाहरण प्रस्तुत किया है। अंग्रेजी में भी यह कहा गया है कि-

Example is better than percept.

धन्यवाद।

बेटियां

श्रीमती आकांक्षा पटेल
पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार, स्टेनोग्राफर

जिस घर में होती हैं बेटियां,
उस घर को खुशियों से महकाती हैं बेटियाँ,
ईश्वर का आशीर्वाद होती हैं बेटियाँ।
जो सौभाग्य से प्राप्त होती हैं बेटियाँ॥
मां के जीवन का सार होती हैं बेटियाँ,
पिता के सर का ताज होती हैं बेटियाँ।
बेटियों के आने से झूम उठता है घर आंगन,
मां-बाप के चेहरे की मुस्कान होती हैं बेटियाँ।
माँ-बाप के जीने की आस होती है बेटियाँ,
यूँ तो सारा संसार होती है बेटियाँ॥

आओ प्रकृति से सीखो

स्वास्तिक बी. रसाईली
सुपुत्र श्री राजेश कुमार रसाईली

नदी से सीखो निरंतर बहना,
पर्वत से सीखो अडिग रहना।
पेंड़ों से सीखो आंधी सहना,
पक्षियों से सीखो मधुर बोलना।

हवाओं से सीखों जीवन देना,
पशुओं से सीखो संतुलन बनाना।
मिट्टी से सीखो नया जीवन देना,
समुद्र से सीखो स्थिर रहना॥

फूलों से सीखो नित्य मुस्कराना,
आसमान से सीखो फैलते जाना।
सूर्य से सीखो प्रकाश फैलाना,
चन्द्रमा से सीखो शीतलता देना ।

फलों से सीखो मिठास देना,
पानी से सीखो प्यास बुझाना।
अनाज से सीखो भूख मिटाना,
तारों से सीखो सदा झिलमाना॥

हिंदी

सुशांत बी. रसाईली
सुपुत्र श्री राजेश कुमार रसाईली

हिंदी से है हिंदी की शान,
इसी से बना भारत महान।
प्रत्येक भारतीय की यही पहचान,
हिंदी का करेंगें सभी सम्मान।

हिंदी ने सारे भेदभाव को तोड़ा है,
सारे भारतवासी को एक सूत्र में जोड़ा है।
हिंदी ही है देश प्रेम का आधार,
आओ मिलकर करें हिंदी से प्यार॥

युगों युगों से करते हैं हिंदी से प्यार,
हम भारतवासी करते हैं हिंदी का गुनगान।
चारो तरफ है हिंदी का बोलबाला,
हम करते हैं सब मिलकर हिंदी का सम्मान।

मजदूर की मजबूरी

श्रीमती रेनू नागल
पत्नी श्री राजू नागल, डी.ई.ओ.

बारिश की ये बूंदे कही किसी के मन को भाती हैं,
तेजी से जब ये गिरने लगती हैं, मेरे मन को विचलित कर जाती है।
कहां आने देती है बारिश के पानी को, मेरे घर के अन्दर ये कंकरीट की छत।
पर सोचती हूँ, क्या किसी गरीब के घर की फूस से बनी छत,
इस तेज बारिश को घर में आने से रोक पाती हैँ ?
नहीं, नहीं रोक पाती वो फूस की बनी छत।
और अक्सर बारिश में इधर, उधर से टूट जाती है।
मेरे घर की छत की तरह, मजबूत नहीं है उस गरीब का शरीर,
इसलिए मजदूरी भी रू.400 की उसी हिसाब से आती है।
नहीं है हक उसे 200 रू. किलो भाव के टमाटर खाने का।
क्योंकि तेज बारिश की वजह से टमाटर की भी कीमत बढ़ जाती है,
शुक्र है, मिल जाता है उस गरीब को राशन बी.पी.एल. कार्ड की वजह से ।
पर कई समझदारों को यह बात भी चुभ जाती है।
सावन का त्योहार जब भी बारिश को संग लाता है।
लोगों के मन में उत्साह सा भर जाता है।
पूछ लिया उस मजदूर से यूं ही मैने, क्या भाई तुम्हे सावन का त्योहार भाता है।?
बड़ी सहजता से उसने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया,
दिहाड़ी नहीं मिलती है ऐसे मौसम में ऊपर से त्योहार का खर्चा भी आ जाता है।

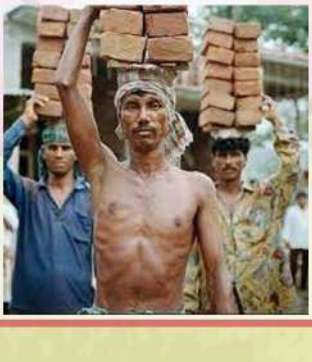

महिलाओं की स्थिति

श्री राजू नागल,डी.ई.ओ.

एक महापुरूष द्वारा कहा गया है कि:-
"किसी भी देश की प्रगति को, उस देश में
रहने वाली महिलाओं की स्थिति से मापा जा सकता हैं। "

नमस्कार, मुझे इस विषय पर अपने विचार रखने का अवसर इस 'हिंदी वार्षिक पत्रिका' के माध्यम से मिला है, जिसके लिए मैं धन्यवाद कहना चाहता हूँ।

आज वर्तमान समय सन 2023 में इस विषय पर अपने विचार रखते समय मेरी आंखों के सामने मणिपुर राज्य में हुई शर्मनाक घटना का दृश्य आ जाता है। क्या मानसिकता रही होगी, ये घिनौना कृत्य करने के पीछे ? गौरतलब है कि ये मानसिकता एक दिन में विकसित होने वाली सोच नहीं है। इसकी जड़े प्राचीन समय से ही हमारे देश में गहराई से फैली हुई है।

क्यूँ ? पुरूष वर्ग द्वारा प्राचीन समय से ही अपनी मर्दानगी को साबित करने की पहल एक महिला से ही की जाती है। किसी से प्रतिशोध लेना हो तो महिलांओं को ही केन्द्र बनाया जाता है। कितनी आसानी से हिंदू धर्म के महाकाव्यों (महाभारत) में महिला को जुएं में हारता दिखाया गया है। अथर्ववेद में कन्याओं के जन्म की निंदा की गई। मैत्रेयनी संहिता में औरत को जुआ और शराब की भांति पुरूष का तीसरा दोष बताया गया है। मुस्लिम धर्म के अनुसार किसी भी महिला को "तलाक" शब्द 3 बार कह देने से तलाक मान लिया जाता था और यदि उस महिला को उसी पुरूष से पुनर्विवाह (निकाह) करना हो तो "हलाला" जैसी प्रथा का सामना करना पड़ता है। सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का जन्म भी भारत में हुआ है।

आश्चर्य की बात ही ये नियम महिलाओं के लिए थे और जो महिलांए निचले वर्ग से संबंध रखती थी और उन्हे "ब्रेस्ट टैक्स" जैसे कर को चुकाना पड़ता था। जी हाँ मैं बात कर रहा हूँ केरल राज्य के त्रावन कोर साम्राज्य की जहां "नाडार", "इजवा" और ऐसी अन्य निचली जाति की महिलाओं को अपने स्तन कपड़े से ढकने का अधिकार नहीं था। इस काले कानून से तंग आकर "नादर" समाज की एक महिला जिसका नाम "नादेली" था, ने विरोध किया और अपने स्तनों को काट कर टैक्स के रूप में दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। आज भी दक्षिण भारत में इस महिला की कहानी इतिहास के पन्नों में वर्णित है। जरा सोच के देखिए प्राचीन समय की ये घटनाएं और वर्तमान समय में घटित मणिपुर की घटना से कितना बदलाव आया है मानसिकता में। ऐसी ही न जाने कितनी घटनाएं हमारे देश में घटित होती हैं। कुछ आज के समय में "सोशल मीडिया" के माध्यम से हमारे सामने आ जाती हैं और बहुत सी घटित होकर रह जाती है।

भारत देश की अधिकतर महिलाओं की संख्या ग्रहणी स्त्री की है जिनके घर के कार्य को नौकरी की श्रेणी में कहा जाता है।

आज भी हमारे देश की ना जाने कितनी महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार हो रही हैं उन्हे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताणित किया जाता है।

मेरी ये बातें उन महिलाओं के संदर्भ में बिल्कुल नहीं है जिन्हे शुरू से ही विशेषाधिकार मिले हैं और उनके द्वारा उनका गलत इस्तेमाल किया गया।

जिन महापुरूषों द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयास किए गए निस्संदेह व उनकी जितनी सराहना की जाए उतनी कम है।

"राजराम मोहन राय" द्वारा 1829 में ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल "लार्ड विलियम बैंटिंग" के माध्यम से सती प्रथा पर रोक लगाई गई।

1848 में महात्मा ज्योतिबा फूले और उनकी पत्नी सावित्री बाई फूले द्वारा पुणे (महाराष्ट्र) में महिलाओं के लिए देश का प्रथम विद्यालय खोला गया।

1873 में ज्योतिबा फूले द्वारा "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की गई, जिसके माध्यम से विधवा महिलाओं के पुनर्विवाह पर जोर दिया गया ।

1947 में डा. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा "हिन्दू कोड बिल" लाया गया, जिससे मुख्य रूप से महिलाओं के अधिकारों को रखा गया परन्तु इस "हिन्दू कोड बिल" का पूरे भारत में विरोध हुआ और मजबूर होकर डा. बी. आर. अम्बेडकर ने इस विरोध के विरोध में कानून मंत्री पद से स्तीफा दे दिया।

इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि देश की हर एक महिला ऐसे महापुरूषों की ऋणी है और सदैव रहेगी।

सफल अनुवादक के लक्षण

श्री अशोक कुमार,
वरिष्ठ अनुवादक

आधुनिक युग में जहां देश वैश्वीकरण पर जोर दे रहा है, वहाँ भाषा की एक महत्वपूर्ण भूमिका की आवश्यकता होती जा रही है। विश्व स्तर पर विचार विनिमय हेतु भाषा का एक अहम् स्थान है। अनुवादक एक सेतु है, जो तमाम देशों के मध्य एक वहुदिशागामी तथा आवागमन प्रशस्त करने वाला मार्ग दर्शक की भूमिका अदा करता है। अनुवादक को अनुवाद कार्य में पूर्णतः तथा समग्रताः को रखते हुए भी अदृश्य रहना होता है।

अनुवादक को श्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक व्यवस्था शैली तथा अनुप्रयोगात्मकता का अधिकारिक ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को श्रोत भाषा के मुहावरों, लोकोक्तियों की विशिष्ट प्रयोगों की सूक्तियों-कथनों की गहन समझ होनी चाहिए।
अनुवाद के समक्ष बहुत सारी समस्याएं आती है, उन्हे निवारण करने की क्षमता होनी चाहिए। अनुवादक से श्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा दोनों की समाज तथा संस्कृति के ज्ञान की अपेक्षा की जाती है।

अनुवाद कार्य किसी सामान्य या अतिसामान्य अथवा अल्पज्ञ की ओर से संपन्न होने वाला साधारण या सामान्य कार्य नहीं है। सफल अनुवादक बहुज्ञ और विवेकशील होता है जो कुशल कारीगर और कुम्हार की तरह कार्य करने में अपने जीवन को धन्य समझता है। मूल भाषा के संदर्भ, प्रसंग, परिवेश, प्रयोजन, प्रासंगिकता, तार्किकता तथा सूचनात्मकता आदि को पहचानने की क्षमता किसी बहुज्ञ व्यक्ति में ही हो सकती है। साथ ही उसका विवेक बुद्धि भी अनुवाद कार्य में साथ देने लगता है। सफल अनुवादक को आरंभ से अंत तक सावधान तथा सतर्क रहना पड़ता है। मूल लेखन में लेखक जितना सतर्क रहता है, उतना ही अनुवादक को भी सतर्क तथा सावधान रहना आवश्यक होता है। यह सावधानी तथा सतर्कता पाठ-चयन, पाठ-पठन से लेकर मूल से मिलान अर्थात तुलना तथा संशोधित भाषांतरण तक आवश्यक होती है। इसी से अनुवाद कार्य सफल तथा बोधगम्य होता है।

अनुवादक को भाषा के प्रति अभिरूचि होनी चाहिए। मूल लेखक के विचारों को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुंचाने की निष्ठा एवं श्रद्धा होनी चाहिए है। एक सफल अनुवादक को चेतनशील होना आवश्यक है। अनुवाद करते समय अनुवादक के दिल व दिमाग में यह विचार पनपना चाहिए कि वह जिस भाषा का अनुवाद जिस भाषा में कर रहा है, वह भाषा पाठक अर्थात पढ़ने वालों के समझ में आना चाहिए अर्थात अनूदित सामग्री बोधगम्य हो तभी सफल अनुवाद समझा जा सकता है। अनूदित सामग्री पाठक के समझ में आने पर अनुवादक एवं पाठक दोनों को संतुष्टि का अहसास होता है और ऐसे सफलतापूर्वक कार्य करने से वह उस कार्यालय में लोकप्रिय बन जाता है।

अनुवाद कार्य के समय अनुवादक के मन मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का तनाव, उलझन, तथा व्यक्तिगत या अवैक्तिगत दिमागी समस्याएं नहीं पनपनी चाहिए। क्योंकि शांत दिल, दिमाग तथा मस्तिष्क में नए-नए विचार तथा शब्दों का परिष्कृत रूप का प्रस्फुटन होता है। इसीलिए, अनुवाद कार्य के समय स्वतन्त्र एवं स्वच्छंद वातावरण का होना नितांत आवश्यक है।

कुछ कार्यालयों में यह देखा गया है कि अनुवादक को उसकी प्रकृति के अनुरूप अनुवाद कार्य न कराकर उसे कार्यालय के अन्य कार्यों में संलग्न कर दिया जाता है, जिससे उसकी योग्यता/ प्रतिभा का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है और एक अनुवादक को जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नियुक्त किया जाता उस उद्देश्य की पूर्ति से कार्यालय वंचित रह जाता है। अनुवादक की प्रतिभा निखरने का अवसर न दिए जाने के कारण उसकी योग्यता /प्रतिभा शनै-शनै विलुप्त होने लगती क्योंकि किसी भी कार्य के बारंबार करने से उसकी पूर्णताः में निखार आने लगता है। एक दोहे के माध्यम से अभ्यास का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

"करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात से सिल पर पड़त निसान"

अंग्रेजी में भी कहावत है-
"Practice makes a man perfect"

अतः इस लेख के माध्यम से मेरी ऐसे कार्यालयों से अपील है कि अनुवादक को उसके पदानुसार कार्य की प्रकृति के अनुरूप कार्य करने का अवसर उपलब्ध कराएं तथा उसकी वास्तविक योग्यता/ प्रतिभा का कार्यालय में सदुपयोग करें ।

धन्यवाद...

कोंगथोंग गाँवः मेघालय का एक अनूठा गाँव

श्री पार्थ ज्योति दे,
स.ले.अ.

मेघो का आलय "मेघालय" भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में से एक है, जो अपनी प्राकृतिक सौंदर्यता, घने जंगल और शानदार पहाड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के छोटे-छोटे गांव अपनी अनोखी पहचान के लिए जाने जाते हैं, और इनमें से एक गांव है, "कोंगथोंग" जो अपने मेलोडियस नामकरण विधि के लिए प्रसिद्ध है। मेघालय भारत का उत्तर-पूर्वी राज्य है, जिसे हम सब प्रकृति की अद्भुतता के लिए जानते हैं। यहां एक ऐसा छोटा सा गाँव है, जिसे "कोंगथोंग" नामकरण किया गया है। यह गाँव मेघालय की प्राकृतिक सुंदरता, आदिवासी संस्कृति और अनूठी प्रथाओं के लिए मशहूर है। यह गांव अपनी अनूठी परंपराओं, संस्कृति, और नृत्य-संगीत की वजह से मशहूर है।

कोंगथोंग गांव की सबसे खास विशेषता है उसके नामकरण प्रणाली का। इस गांव में हर बच्चे को अपना खास गाया जाने वाला नाम दिया जाता है। दरअसल, पीढ़ियों से यहां जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो माँ उसके लिए कोई धुन बनाती है। उनके नाम के साथ यह धुन उस बच्चे की पहचान बनती है। कोंगथोंग के ग्रामीणों ने इस धुन को 'जिंगरवाई लवबी' नाम दिया है, जिसका अर्थ है माँ का प्रेम गीत। आपको यह थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन यही हकीकत है। यह नाम एक मेलोडियस ध्वनि के रूप में होता है। अपने नामकरण में बच्चों के नामों में बदलाव नहीं होता है और यह नाम उनकी पहचान बनता है। हालांकि, हर किसी का नाम हमारे जैसा ही होता है, लेकिन माँ अपने बच्चों को गाकर या सीटी बजाकर ही बुलाती है। सबसे अनोखी बात तो यह है कि यहाँ हर घर के लिए भी धुन अलग होती है। धुन या लोरी से ग्रामीण बता सकते हैं कि व्यक्ति किस घर का है। इस प्रथा के बजाय, गाँव के लोगों ने नामों को सिर्फ याद रखने के लिए ही नहीं, बल्कि एक अनूठा और मनोहारी प्रणाली के रूप में इस्तेमाल करने का फैसला किया है। यदि किसी ग्रामीण का देहांत होता है तो उस व्यक्ति की धुन भी मर जाती है।

इस प्रथा के पीछे की वजह की बात करें तो गांव में, पुराने समय से एक मान्यता चली आ रही है। इसके अतिरिक्त जंगल में जाने वाले लोग एक-दूसरे को नामों से पुकारते हैं, तो एक सर्वनाशकारी प्रेत या आत्मा उन्हें जान जाती है और उनके परिवारों को नुकसान पहुंचाने के लिए उनके घरों तक उनका पीछा करती है।

कोंगथोंग गांव की नामकरण प्रणाली ही नहीं, बल्कि यहां की संस्कृति और जीवनशैली भी अद्भुत है। खासी जनजाति के लोग अपनी प्राकृतिक संस्कृति और गीतों के माध्यम से अपने अन्तरंग भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इन्हें अपने शानदार नृत्य-संगीत और लोक कथाएं प्रस्तुत करने का बहुत शौक है। कोंगथोंग गाँव एक प्राकृतिक आश्रय स्थल के रूप में भी मशहूर है। यह गाँव हरियाली से घिरे हुए खूबसूरत पहाड़ों में स्थित है और पर्यटकों को शांति और स्थिरता का अनुभव कराता है। यहां के घास के मैदान, झरने, और प्राकृतिक सुंदर दृश्य इसे एक प्रिय गंतव्य बनाते हैं।

कोंगथोंग के लोगों का जीवन सरलता, संयम और समृद्धि पर आधारित है। यहां के लोग अपनी प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करते हैं और प्रकृति से मिलने वाली सभी सुविधाओं का सदुपयोग करते हैं। गांव के आस-पास की घाटियाँ और पहाड़ियाँ प्राकृतिक खजाने के समान हैं, जिनसे लोगों को खुदाई जीवन की महत्वपूर्ण सीख मिलती है।

अधिकतर गांवों में आधुनिकता के साथ बदलते रहने के बावजूद, कोंगथोंग गांव ने अपनी परंपरागत संस्कृति और विरासत को संजोए रखने में सफलता हासिल की है। इसका एक मुख्य कारण है गांव के लोगों की संघर्षशीलता और इनकी प्राकृतिक संस्कृति के प्रति गर्व और सम्मान की भावना। कोंगथोंग गांव में जीने का तरीका अन्य गांवों से बिल्कुल भिन्न है। इस गांव में भावुकता और सरलता की भावना है जो अनूठी है। इस गांव का दृश्य अपनी तरह अद्भुत है जो हर किसी को आकर्षित करता है।

गाँव में आदिवासी संस्कृति की गहरी जड़ें हैं। यहां के लोग अपनी परंपरागत रंगों में विशेष रुचि रखते हैं और अपनी परंपरागत गीतों और नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं। इन आदिवासी संस्कृति और परंपरागत विलक्षणताओं के कारण, कोंगथोंग गाँव पर्यटकों के लिए आकर्षक है। यहां पर्यटक उनकी आदिवासी संस्कृति का अनुभव कर सकते हैं, स्थानीय विश्राम गृहों में ठहर सकते हैं, और अपने जीवन का एक अनूठा अंचल देख सकते हैं।

आप वर्ष के किसी भी समय इस जगह की यात्रा कर सकते हैं। लेकिन आमतौर पर अक्टूबर से अप्रैल तक आसमान साफ और अच्छा होता है। कोंथकोंग के पास शिलांग में उमराई हवाई अड्डा है। पास में गुवाहटी रेलवे स्टेशन है। गुवाहाटी हवाई अड्डे से भी आप यात्रा कर सकते हैं। यहां पहुंचने के लिए आपको गुवाहाटी से सूमो और कार द्वारा शिलांग आना होगा। शिलांग से यह जगह करीब 55 किमी दूर है।

पश्चाताप

श्री आनंद कौशल,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हर साल की तरह इस साल भी हमारे दोस्तों ने पिकनिक पर जाने का फैसला किया। क्योंकि मैं शहर से बाहर था तो मुझे इसकी सूचना टेलीफोन पर दी गई। चूँकि पिकनिक के आयोजन का निर्णय पहले ही हो चुका था, इसलिए मुझे कुछ नहीं कहना था। लेकिन इन दिनों, मैं अपने कार्यालय के काम और व्यक्तिगत कर्तव्यों में व्यस्त रहता हूँ, जो अपरिहार्य हैं। मेरे काम का दायरा छुट्टी के दिनों और छुट्टियों तक भी फैला हुआ है। कभी-कभी मेरे दोस्त मुझसे नाराज़ और निराश हो जाते है। उन्हें लगता है कि मैं एटीट्यूड दिखा रहा हूँ, लेकिन इन दिनों मैं किस दौर से गुजर रहा हूँ, ये सिर्फ मैं ही जानता हूं। बेशक जिस दिन पिकनिक तय की गई थी वह रविवार था, लेकिन मुझे काम पर रिपोर्ट करना था, हालांकि यह केवल दो घंटे के लिए था, मैं काम छोड़ नहीं सकता था। सुबह ऑफिस में रिपोर्ट करके 10 बजे पिकनिक के लिए निकलने का निर्णय हुआ जबकि मुझे 8 बजे रिपोर्ट करना था। मेरे पास अपने दोस्तों से मेरे बिना आगे बढ़ने और बाद में मुझे उनके साथ शामिल होने की अनुमति देने का अनुरोध करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था। मेरे मित्र विचारशील होने के कारण तुरंत इस पर सहमत हो गए।

शनिवार को मार्केटिंग की गई; परिवहन की व्यवस्था की गई थी। रविवार के लिए कुछ भी नहीं बचा था सिवाय इसके की लोग समय पर आ जाएं और यात्रा पर निकल जाएं। हमेशा की तरह, कुछ दोस्तों के देर से आने के कारण कार्यक्रम में लगभग 30 मिनट की देरी हुई। तो वे सुबह करीब साढ़े आठ बजे चले गए, मैंने उन्हें विदा किया। मुझे उनसे ईर्ष्या हो रही थी लेकिन परिस्थिति से समझौता करना पड़ता है इसलिए मैं अपने काम के लिए तैयार होने के लिए घर वापस चला गया। मुझे घर में देखकर मेरी पत्नी आश्चर्यचकित रह गई, उसने पूछा, "यह क्या? मुझे लगा कि तुम पिकनिक के लिए निकले हो। "

"अरे यार, मैंने तुम्हें कल शाम को नहीं बताया था?" मुझे एक ही चीज़ को कितनी बार दोहराना होगा? मुझे अपने काम पर जाना है और मैं बाद में उनके साथ जुड़ जाऊंगा।"

“नहीं, मुझे लगा कि आप मजाक कर रहे हैं। इसका मतलब है... आप दोपहर के भोजन के लिए नहीं आ रहे हैं?” 'अरे बुद्धू! मैं पिकनिक पर जा रहा हूँ। मैं दोपहर के भोजन के लिए घर कैसे आ सकता हूँ? और याद रहे- मैं ऑफिस से सीधे जाकर उनकी (पिकनिक पार्टी में शामिल हो जाऊँगा। क्यों, ठीक है ना ?" "ठीक है। चूँकि घर पर कोई नहीं होगा इसलिए मैं खाना भी नहीं बनाऊँगी।"

"तुम्हारे और शानू के बारे में क्या? फिर आप लोग क्या करोगे?"

वह व्यंग्यपूर्वक बुदबुदाती हुई बोली, "उ पानी त तेही हो। (वह भी उसी तरह की है) बजू को घर जाने गरे (वह नानी के घर जाना चाहती है)। छुट्टी भयो कि, बाऊ एका तीरा, छोरी एका तीरा। म घरमां एकलो टुक-टुकी, मलाई के को खांचो। म पानी मेरो माईत जांछू। (अगर कोई छुट्टी होती है, तो आप एक तरफ चले जाते हैं और आपकी बेटी दूसरी तरफ, मुझे एक प्रहरी की तरह घर पर छोड़ दिया जाता है। मैं क्यों परेशान होऊँ? मैं भी अपनी माँ से मिलने जाऊंगी)।"

"ठीक है, जैसा तुम्हें अच्छा लगे वैसा करो। कभी-कभी, आपको अपने माता-पिता से भी मिलने की जरूरत होती है। लेकिन कृपया ध्यान रखें कि मेरे घर पहुंचने से पहले आप वापस आ जाएंगे।" "अच्छा...!"

ऑफिस का काम ख़त्म करने के बाद मैं जल्दी से कैब के लिए निकला। लेकिन स्टैंड पर केवल एक अकेली कैब खड़ी थी। मुझे लगा कि भगवान ने मेरे लिए कैब की व्यवस्था की है। थोड़ी बातचीत के बाद ड्राइवर पाँच सौ रुपये में मुझे पिकनिक स्पॉट तक ले जाने को तैयार हो गया। मैं गाड़ी में बैठ गया और जब गाड़ी मावलाई पहुँची तो मैं पूरी तरह से अपने विचारों में खो चुका था। मैंने अपने जीवन, परिवार वगैरह के बारे में सोचना शुरू कर दिया था। हमारा एक बड़ा परिवार है, जिसमें कुल साठ-सत्तर सदस्य हैं। लेकिन, हमें किसी समारोह में इन सभी से मिलने का मौका कम ही मिलता है। जब भी हम मिलन समारोह आयोजित करते हैं, हम पाते हैं कि कोई न कोई गायब है।

जब मैं पूरी तरह से अपने विचारों में डूबा हुआ था, मुझे टैक्सी की पिछली सीट से हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। पीछे बैठे कुछ चार-पांच लोग बातें कर रहे थे। पहले तो मैने कोई परवाह नहीं की और अपने विचारों में डूबना जारी रखा। लेकिन जैसे-जैसे टैक्सी आगे बढ़ी, फुसफुसाहट और तेज होने लगी। अचानक, मैंने सुना कि मेरा नाम लिया जा रहा है। वे कभी-कभी जोर-जोर से हंस रहे थे, जैसे उनमें से किसी ने कोई चुटकुला सुनाया हो। वे पाँच थे; एक को छोड़कर सभी हमारे परिचित के थे। वह सुन्दर और सुडौल था। हमारे लड़के मेरी ओर देखकर मुस्कुराए और आदर से झुककर बोले, "दाजी (बड़े भाई), आप आ गए?"

उनके सम्मान को स्वीकार करते हुए, मैंने उत्तर दिया, "ओह, हाँ! आप सब कैसे हैं? क्या सब आ गए? मुझे लगता है कि मैं आने वाला आखिरी व्यक्ति हूँ। ठीक?"

एक ने कहा, "नहीं, कुछ लोग अभी आने बाकी हैं।"

"ओह, इसका मतलब है कि मैं अभी भी समय से हूँ। वैसे, बाकी लोग कहाँ हैं?"

दूसरे ने तुरंत उत्तर दिया, "वे वहाँ हैं, वाहन के पास इकट्ठा हुए हैं। यदि आप चाहें तो आप उनसे जुड़ सकते हैं।" "क्यों यार? क्या आप लोग चाहते हैं कि मैं चला जाऊं? वैसे भी, मुझे अपना चेहरा उनको दिखाना चाहिए। ठीक है, आप लोग आनंद लो।"

अचानक, एक अपरिचित आवाज मेरे कान में पड़ी,-“तो, यही स्मार्ट अंकल है- है ना?” मैंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, मैं पीछे नहीं मुड़ा, बल्कि आगे बढ़ता रहा। मैंने दोस्तों के दूसरे समूह को वाहन में सामान व्यवस्थित करते हुए देखा। मुझे अपनी ओर आता देख उन्होंने मेरा स्वागत किया ।

मैंने भी वैसा ही किया और खुद को चीजों की व्यवस्था करने में लगा दिया ताकि हम जितनी जल्दी हो सके प्रस्थान कर सकें। सब पहुंच गए थे। इस बार हम गत वर्ष चौदह की तुलना में पन्द्रह थे। इसमें वह सुंदर और भड़कीला लड़का भी शामिल था। हम चलने ही वाले थे। तभी हमारे एक दोस्त ने हमें इस नये व्यक्ति से मिलवाना शुरू किया। मैं परिचय पाने वाला अंतिम व्यक्ति था।

उन्होंने कहा, "दाजी, यह हमारा भाई हरिकिशन है।"

"बीच में हस्तक्षेप करते हुए उस व्यक्ति ने कहा, "Common dude, it's Harry! वे मुझे हैरी कहकर बुलाते हैं।"

"जो भी हो, क्षमा करें भैया, यह हैरी है और एक सामाजिक कार्यकर्ता है।"

"यह एक सामाज सेवी? लेकिन यह तो समाज सेवी के तुलना में मॉडल ज्यादा दिखता है । मुझे माफ़ करें। आपका स्वागत है हरि... माफ करना मिस्टर हैरी ।"

उन्होंने अपने ही अंदाज में अपनी खूबसूरत शारीरिक हरकतों के साथ मुझे धन्यवाद दिया। उसने पीछे, खिड़की के पास अपनी सीट लेना पसंद किया। फिर हम निकल पड़ें। कुछ समय बाद, टेप में कुछ घटिया हिंदी रैप गाना शुरू हो गया। कुछ मिनटों के बाद, हर किसी ने टेप की कर्कश ध्वनि के बारे में शिकायत करना शुरू कर दिया और अंततः संगीत बंद हो गया। फिर हममें से कुछ लोगों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना शुरू किया लेकिन यह हर तरह से एक आपदा थी। कुछ लोग चलती बस में डांस भी कर रहे थे।

मुझे अभी भी नए आदमी के बारे में कुछ आशंका थी। मुझे नहीं पता कि यह सब क्या था, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि यह भावना नकारात्मक थी या सकारात्मक। मैंने बस उसे चोरी से देखने के बारें में सोचा और मैं अपने शरीर को सीधा करने का नाटक करते हुए उठ खड़ा हुआ। मैंने उस पर ध्यान दिया। वह हमारे एक लड़के के साथ बैठा था जो समूह में सबसे छोटा था और बहुत अच्छे स्वभाव का था, उसका नाम सतीश था। मैं संतुष्ट था। मैं बैठ गया और हम फिर से बातचीत करने लगे। यात्रा अच्छी चल रही थी। आखिरकार हम मौके पर पहुंच ही गए। सौभाग्य से वहाँ कोई अन्य पिकनिक पार्टियाँ नहीं थीं इसलिए हमें अपनी पसंद की जगह मिल गई।

हम वाहन से नीचे उतरे और सब कुछ वाहन से बाहर निकाला। सभी अपना समय बर्बाद न करते हुए अपना- अपना काम करने में लग गए। जसु दाई, गणेश और मैंने खाना पकाने की जगह की सफाई और तैयारी शुरू कर दी। हमने आग जलाई और चाय के लिए पानी केतली पर रखा। ऐसा करते समय मैंने बस चारों ओर देखा और पाया कि दो लोग गायब थे। मैंने जसु दाई से पूछा, "वे दोनों लोग कहाँ हैं? जब से हम यहां पहुंचे हैं मैंने उन्हें नहीं देखा है।"

"वे आसपास ही कहीं होंगे," जसु दाई ने कहा।

मैंने झट से कहा, "गाड़ी से उतरने के बाद से मैंने उन्हें नहीं देखा है।

अरे, रामू! जरा देखना तो वे लोग गाड़ी में सो रहे होंगे। उन्हें बाहर बुलाओ।" इसी बीच मैं सामान व्यवस्थित करने लगा और जसु दाई की ओर मुखातिब होते हुए बोला, "अगर हम अपना नाश्ता जल्दी खत्म कर लें तो हम खाना बनाना शुरू कर सकते हैं ताकि हमें यहां से निकलने में देर न हो।"

"आप सही कह रहे हैं," जसु दाई ने कहा।

रामू गाड़ी से बाहर आया और हमारी मदद करने लगा। रामू को गाड़ी से बाहर निकलते देख गणेश ने पूछा, "अरे रामू, क्या हुआ? क्या वे अंदर नहीं हैं?" रामू ने झिझकते हुए उत्तर दिया, "वे बस में हैं। उन्होनें कहा है कि वे बाद में शामिल होंगे।

गणेश ने फिर कहा, "वे वहाँ क्या कर रहे हैं?"

रामू ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं। वे नशे में हैं।"

अचानक एक तेज़ और कर्कश आवाज़ ने इलाके की शांत वातावरण को तोड़ दिया। यह वह नया लड़का हरिकिशन था। वह दरवाजे का हैंडल पकड़ कर चिल्लाया, "आओ यार आओ बाहर आओ। आपको किससे डर है? हम अब बड़े हो गए हैं और हम यहां आनंद लेने आए हैं, आप सभी को मालूम होना चाहिए।"

उसकी आवाज सुनकर सभी लोग अचंभित हो गये और उसकी ओर ताकने लगे। किसी ने एक शब्द भी नहीं बोला। वातावरण में असहज शांति छा गई। धीरे-धीरे, सतीश वाहन से बाहर गिर गया। वह मुलायम घास पर सिर के बल गिर पड़ा। अचानक, मैंने एक चीखने की आवाज सुनी और मेरे माथे पर कोई चपटी चीज टकराई और मैं बेहोश हो गया। कुछ सेकंड बाद जब मुझे होश आया तो मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि मैं दिन में स्वप्न देख रहा था और हमारी कैब ने एक छोटे बच्चे को लगभग कुचल दिया था, जो कहीं से सड़क के बीचोंबीच दौड़ता हुआ आया था। कैब के शीशे पर अपना सिर पटकने के बावजूद कुछ नहीं हुआ क्योंकि मैंने सेफ्टी बेल्ट का इस्तेमाल किया था जो शिलांग में आम बात नहीं है।

नजदीकी टक्कर से थोड़ी भीड़ जमा हो गई। उनमें से कुछ बिना तथ्य जाने ड्राइवर पर उंगलियां उठा रहे थे। ड्राइवर अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए बहस कर रहा था, जबकि मैं मूकदर्शक बना हुआ था। मैं उत्तेजित लोगों को शांत करने के लिए कुछ नहीं कर सका क्योंकि मैं स्थानीय बोली नहीं बोल सकता था। सौभाग्य से, स्थिति खराब होने से पहले, एक सज्जन जो पूरे प्रकरण के गवाह थे, घटनास्थल पर आये। उन्होंने बच्चे की मां को धीरे से डांटा। उन्होंने कहा, "अगर आप उनकी देखभाल नहीं कर सकती हैं तो आपने इतने सारे बच्चों को जन्म क्यों दिया?" फिर वह उन लोगों की ओर मुड़े जो ड्राइवर को परेशान कर रहे थे और कहा, "बच्चे को बचाने के लिए हमें ड्राइवर का आभारी होना चाहिए। यह तो उसका अपना सूज-बूझ में तत्काल लिया गया फैसला था जिसने बच्चे को बचा लिया; अन्यथा, बच्चा वाहन से कुचलकर मर गया होता। किसी निर्णय पर पहुंचने से पहले हमें हमेशा तथ्यों पर विचार करना चाहिए। "किसी ने एक भी शब्द नहीं बोला। उन्होंने उनसे हटने और कैब को आगे बढ़ने देने का अनुरोध किया। हमने यात्रा शुरू की लेकिन मुझे पिकनिक के लिए पहले ही देर हो चुकी थी। घटनास्थल ज्यादा दूर नहीं था। दो-तीन किलोमीटर ही दूर था। मुझे अपना सपना याद आया और मैंने पिछले साल की पिकनिक के बारे में सोचा जो बहुत सुखद नहीं थी। दो लोगों ने मजा खराब कर दिया था; पिकनिक का पूरा विचार, जो स्वयं का आनंद लेना था, उनके द्वारा निराश कर दिया गया था। जब तक हम वहां से निकले, हर किसी का चेहरा उदास हो चुका था।

उसके बाद मुझे उनसे मिलने का कोई मौका नहीं मिला। आज मैं उन सभी से दोबारा मिलूंगा और भगवान से प्रार्थना करूंगा कि किसी को पिछली बार की तरह मजा खराब न करने दूँ।

आखिरकार हम मौके पर पहुंच ही गए। मैंने ड्राइवर से अपने साथ आने के लिए आग्रह किया लेकिन उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि उसे एक और काम में भाग लेना है। मैंने उस पर कोई दबाव नहीं डाला। मैंने उसे किराए के लिए पाँच सौ रुपये और टिप के रूप में अतिरिक्त पचास रुपये दिए।

जैसे ही मैं पिकनिक स्पॉट पर उतरा, मेरे दोस्त मुझे देखकर मेरे आगमन की जय-जयकार करने लगे।

मुझे खुशी हुई कि वे अच्छा समय बिता रहे थे और मैं पहाड़ी से नीचे उतर गया।

उन्होंने अपना नाश्ता खत्म कर लिया था। खाने का ज्यादातर सामान पहले ही तैयार हो चुका था। कुछ क्रिकेट खेल रहे थे। हमेशा की तरह जसु दाई और गणेश खाना बनाने में व्यस्त थे। कुछ लोग संगीत बजा रहे थे। मैंने अपना योगदान देने के लिए जसु दाई और गणेश से जुड़ना पसंद किया। उन्होंने मुझसे अपने हिस्से का नाश्ता लेने को कहा, लेकिन मैंने इसके बजाय फल खाना पसंद किया। जल्द ही, लोगों ने मुझसे एक दोस्ताना मैच में शामिल होने के लिए कहा जो दो टीमों के बीच होने वाला था लेकिन मैंने इंकार कर दिया। बाद में मैं क्रिकेट के खेल में लड़कों के साथ शामिल हो गया। मैंने देखा कि कुछ लोग गायब थे और मैं खुद को रोक नहीं सका और पूछा, "बाकी लोग कहाँ है?"

"उन्हें आसपास होना चाहिए। चिंता न करें वे जल्द ही हमारे साथ जुड़ेंगे," उन्होंने पूर्वाभ्यास के अंदाज में जवाब दिया।

जल्द ही दिखावटी गंभीरता और उल्लास के बीच क्रिकेट की शुरुआत हुई। मैंने काफी समय से क्रिकेट या कोई खेल नहीं खेला था। एक साल से ज्यादा हो गया। मेरी सारी मांसपेशियां सख्त हो गई थी। मैं ठीक से गेंद फेंक नहीं पा रहा था और सभी लोग इस पर हंस रहे थे। तब मुझे एहसास हुआ कि फिट रहने के लिए नियमित शारीरिक गतिविधि करनी चाहिए। मेरे कंधे के जोड़ों से मुझे परेशानी होने लगी और इसलिए मैंने गेंद फेंकना बंद कर दिया। मैंने थोड़ी देर बल्लेबाजी करना पसंद किया। जब हम खेल रहे थे, हमने पास के नाले से कुछ आवाज सुनी। तीन लोग हमारी ओर दौड़ते हुए आये। पहले तो मुझे लगा कि वे अजनबी हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे हमारे करीब आए, मैंने पहचान लिया कि वे हमारे अपने लोग थे। रामू आगे-आगे दौड़ रहा था और बाकी दोनों सुशील और हरिकिशन उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। उस पल मुझे डेजा वु की (वर्तमान स्थिति से पहले ही जी लेने की एक तीव्र, लेकिन झूठी भावना है।) अनुभूति हुई लेकिन मैंने इसे अपने तक ही सीमित रखा। जल्द ही, वे वहाँ पहुँच गए जहाँ हम इकट्ठे हुए थे। जब रामू और सुशील मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछ रहे थे तो वे जोर-जोर से साँस ले रहे थे। मैंने उनसे स्वीकारोक्ति में बात की और उन्हें आराम करने के लिए कहा।

"मैं ठीक हूँ, मैं बहुत पहले आ गया हूँ। आप लोग आसपास नहीं थे, कहाँ थे?" मैंने जिज्ञासा की।

"आह, दाजी ले थट्टा गार्नु हुँदैछ (आप मजाक कर रहे होंगे)।"

फिर मैंने हरिकिशन की तरफ देखा लेकिन उसने मेरी नज़र बचा ली। उसने अपने हाथों से अपनी पतलून को साफ करने का नाटक किया। मैंने कुछ भी नहीं कहा। मैंने आज एक अलग हरिकिशन को देखा। वह सभ्य दिख रहा था लेकिन पिछले साल की तुलना में वह मजबूत और स्वस्थ नहीं दिख रहा था।

कुछ देर बाद खाना तैयार हो गया। जसु दाई ने भोजन के लिए आवाज लगाई। हम सभी भोजन और अन्य सामान बीच में रखकर एक घेरे में बैठ गए। हमने खाना शुरू किया जब हरिकिशन ने कहा, "क्या हमें खाने से पहले देवता (जंगल के देवताओं) पर प्रतिबंध लगाने के लिए भगवान को कुछ भोग नहीं लगाना चाहिए।" फिर हम खाना खाने लगे। भोजन वास्तव में स्वादिष्ट था और हमने इसका भरपूर आनंद लिया। खाना खाने के बाद हम बर्तन और क्रॉकरी धोने लगे।

जब तक हमने सब कुछ खत्म किया, तब तक शाम के 04.30 बज चुके थे। करने को कुछ नहीं बचा था खैर हमारे पास अभी भी समय था। मुझे लगता है कि जसु दाई ने भी इसे महसूस किया ऐर ने कहा, "ठीक है भाई, चलो जाने से पहले थोड़ा आराम करें और अपनी पिकनिक खत्म करने से पहले थोड़ी बातचीत करें।" फिर हमने अपने परिवार, हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे थे ऐर अपनी उपलब्धियों आदि के बारे में बात करना शुरू कर दिया। बीच बीच में हममें से कुछ लोग चर्चा को ऐर दिलचस्प बनाने के लिए चुटकुले सुना रहे थे।

इस बीच, अवचेतन रूप में पिछले साल की पिकनिक से तुलना कर रहा था। दोनों में बहुत अंतर था। पिकनिक उत्साह से भरी थी, हर कोई पिकनिक का आनंद ले रहा था , लेकिन मुझे कुछ याद आ रहा था। पिछली बार जो उत्साह था वह इस बार गायब था। मैंने अपने दोस्तों से पूछा "क्यों यार, आज मुझे सतीश नहीं दिखा। क्या बात है? वह हमारे साथ शामिल नहीं हुआ है क्या?"

सभी ने एक टक नजर डाली। उन्होंने मेरी ओर और हरिकिशन की ओर देखा। "अरे, मैं आप लोगों से कुछ पूछ रहा हूँ......... क्या कुछ गलत कह दिया मैंने?"

वे अभी भी चुप थे। हरिकिशन की भारी साँसों को छोड़कर वहाँ लगभग सन्नाटा छा गया था। वह अचानक मेरी ओर मुड़ा ओर अपनी मजबूत भुजाओं से मुझे गले लगा लिया और इससे पहले कि कुछ कह पाता, उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा, "सतीश को शराब पिलाने के लिए मुझे खेद है।"

"क्या? तुमने उसे शराब पिलाई? कहाँ है वह? क्या वह यहीं कहीं है?" मैंने आश्चर्य से उससे पूछा।

"नहीं दाजी, यह हमारी पिछले साल की पिकनिक के दौरान था, मैंने उससे पीने के लिए आग्रह किया था। मुझे नहीं पता था कि उसे इसकी लत लग जाएगी। अब उसकी हालत हर दिन खराब होती जा रहीं है और वह चलने-फिरने की हाल में नहीं है। दूसरे शब्दों में वह अपनी मृत्यु शय्या पर है।" उसने रोते हुए स्वर में उत्तर दिया और जारी रखा "मैं मानता हूँ कि मैं ही उसके इस हालात के लिए जिम्मेदार हूँ।"

यह दुखद समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। एक क्षण के लिए भी शब्द नहीं बोल सका। कुछ देर बाद मैंने बैठ कर पूछताछ की...."क्यों? उसके साथ गलत हुआ है?"

हरिकिशन ने जबाब दिया, “शराब ने उनके फेफड़े और लीवर को नुकसान पहुंचाया है।”

“क्यों? क्या उसे अस्पातल नहीं ले जाया गया था?” मैंने पूछा।

जसु दाई ने शांत और परिपक्क तरीके से उत्तर दिया, “भाई, जैसा कि आप जानते हैं, साल में एक बार पिकनिक के अलावा इन दिनों हमारे पास अन्य गतिविधि नहीं है। हम अपने निजी मामले में इतने उलझे हुए हैं कि एक-दूसरे से कम ही मिल पाते हैं। जब रामू ने हमें इसकी सूचना दी तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हालाँकि, हम उसे अस्पताल ले गए थे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब कुछ ही दिन की बात है जब उसका निधन हो जाएगा।”

यह सुनने के बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी पहाड़ी की चोटी से नीचे गिर रहा हूँ। मेरा मन उन यादों से गया जो हमने साझा की थी और वह सभी शरारतें जो उसने हमारे साथ की थी। वह मुझसे छोटा था, फिर भी हम सगे भाई जैसे थे। वह एक प्रतिभाशाली युवा था और मैं उसका प्रशंसक था। लेकिन, मैंने सोचा, वह इतनी जल्दी कैसे मर सकता है? मुझे दुःख हुआ क्योंकि मुझे उनकी स्थिति के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। अब दोषी कौन है? मुझे इसके लिए कुछ हद तक जिम्मेदार महसुस महसूस हुआ, क्योंकि पिछले एक साल में मैंने उससे मिलने के लिए तीन सौ पैंसठ दिनों में से एक दिन भी नहीं निकाला था और न ही उसके बारे में पूछताछ की थी। मुझे खुद पर शर्म आ रही थी।

दरअसल, सतीश की गंभीर हालत पर सभी को ऐसा ही लग रहा था। उसकी सलामती के लिए प्रार्थना करने के अलावा हम कुछ नहीं कर सकते थे। शाम के 05.30 बज चुके थे। सूरज डूब गया। आज फिर हर किसी के चेहरे पर उदासी थी। जब हम शहर पहुँचे तो शाम के 07.00 बज चुके थे। हम सभी पूरी तरह थक चुके थे। गाड़ी से उतर कर हम लोग अलग हो गए और मैं सीधे घर पर पहुँच गया। मेरी पत्नी और बेटी पहले ही घर पर थे। घर पर, मेरी पत्नी रात का खाना बनाने में ब्यस्त थी और मेरी बेटी टेलीविजन पर अपना पसंदीदा शो “करिश्मा का करिश्मा” देख रही थी क्योंकि उस दिन रविवार था और वह उस दिन का अपनी इच्छानुसार आनंद लेने के लिए स्वतंत्र थी। मुझे घर आते देख उसने पूछा, “बाबा, पिकनिक कैसी रही? क्या आप हमारे लिए कुछ लाए हैं?” “म़ाफ करना डियर। मुझे कुछ नहीं मिला।” मैंने कहा।

“बाबा, तुम कितने बुरे हो” उसने जबाब दिया।

सोफे पर उसके पास बैठते हुए उससे अनुरोध किया, “ मेरे मेरी प्रिय गुड़िया, क्या तुम कृपया अपनी माँ से मेरे लिए एक कप बढ़िया चाय बनाने के लिए कह सकती हो?”

“ओह! ज़रूर बाबा!” इतना कहकर वह बिना एक इंच भी हिले अपनी माँ से चिल्लाई, “ अम्मा! बाबा वापस आ गए है। उन्हें एक कप चाय चाहिए।”

“अरे...... तुम यहाँ से क्यों चिल्ला रही हो? रसोई में जाओ और माँ को बताओ।” मैंने कहा।

“बस एक मिनट, कृपया एक व्यवसायिक ब्रेक होने दीजिए।” उसने मनाते हुए कहा। मेरी पत्नी रसोई से बाहर निकली और पूछा, “अरे तुम वापस आ गए? पिकनिक कैसी रही?”

"यह ठीक था। क्या कृपया मुझे एक कप चाय मिल सकती है?" मैंने उसकी बात को बीच में रोकते हुए कहा.. "यह जानकर भी मैं थका सा हूँ........" उसने तुरंत उत्तर दिया, "हाँ। जब तक मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ, तुम तरोताज़ा क्यों नहीं हो जाते?"

कुछ देर बाद उसने मेज पर चाय और कुछ नाश्ता रख दिया। मुझे अपनी जगह पर चिपका हुआ देखकर उसने पूछा, "तुम अभी तक तरोताज़ा नहीं हुए?"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं चाय पीने लगा। चाय हमेशा की तरह तृप्त करनेवाली । लेकिन मुझे इसमें मजा नहीं आया। चाय ख़त्म करने के बाद मैं, नहाने के लिए बाथरूम में टला चला गया। लेकिन, सतीश मेरे मन की हर दरार में छाया हुआ था। मैंने तब उससे मिलने का फैसला किया लेकिन मैं ऐसा केवल रविवार को ही कर सका। उस रात, हमने जल्दी खाना खाया ऐर बिस्तर पर चले गए। पूरी रात मैं सतीश के बारे में सोच रहा था ऐर मुश्किल से एक पल के लिए भी सो नहीं पाया। मैं अगली सुबह जल्दी उठ गया और टहलने चला गया। सैर से घर वापस आने के बाद मैं ऑफिस के लिए तैयार हो गया, लेकिन मेरा मन अभी सतीश में ही उलझा हुआ था। मुझे सुस्ती महसूस हो रही थी और मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था। मैं कुछ और करने की कोशिश कर रहा था लेकिन हो कुछ और रहा था। अचानक, मेरे अंतर्ज्ञान ने मुझे सतीश से मिलने के लिए प्रेरित किया। फिर मैंने मोबाइल उठाया और उपने बॉस को फोन किया, बीमारी का बहाना करते हुए मैंने उनसे कहा कि मैं काम पर नहीं आ पाऊंगा। फिर, मैं सतीश के घर के लिए निकल गया।

जब मैं उसके घर पहुँचा तो उसकी माँ आँगन के एक कोने की सफ़ाई कर रही थी। वह साठ वर्ष की थी। उसने मुझे नोटिस नहीं किया, मैंने पास जाकर उनका अभिवादन किया, उसने अपना सिर मेरी ओर घुमाया यह देखने के लिए कि मैं कौन हूँ? वह थकी हुई, उदास और कमजोर लग रही थी। उसके चेहरे पर खोया सा भाव था। पहले तो, उन्होंने मुझे नहीं पहचाना, कुछ देर बाद वह अपनी टूटी हुई आवाज़ में बोली, " एहह! बाबू, आप कब आए? मैंने तुम्हें काफी समय से नहीं देखा है। क्या आप ठीक है?" उसकी आँसुओं से आंखे नम थी। मैं कुछ नहीं कह सका और किसी तरह अपने आँसुओं को बहने से रोका और आशीर्वाद के लिए उनके पैर छू लिए। उन्होंने अपनी कांपती उंगलियों से मेरे सिर को प्यार से सहलाया। इस बार मैं अपने आप को रोक नहीं सका। मैंने उसे गले लगाया, अपनी बाहों में जकड़ लिया और मेरे आँसुओं की धारा बह निकली। वह अपने नाज़ुक और कोमल हाथों से मुझे थपथपाते हुए मुझे सांत्वना देने लगी।

मैं मुख्य दरवाजे की ओर मुड़ा और देखा की बहन बाहर आ रही है। मुझे देख कर दौड़ कर मेरे गले लग गयी और रोने लगी, "दादा, प्लीज़ भाई को बचा लो।"

मैं असहाय था। मेरे पास सांत्वनाओं के अलावा कहने के लिए कुछ नहीं था। "चिंता मत करो मेरी बहन, मैं हूँ ना। मैं देखूँगा कि मैं उसके लिए क्या कर सकता हूँ। लेकिन, रोओगी तो बूढ़ी माँ का क्या होगा? रो मत, ठीक है।"

जैसे ही हम घर में प्रवेश करने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। हरिकृष्ण खाने-पीने की चीजों से भरा बैग लेकर आ गया। मैंने उससे पूछा, "अरे, हरि, तुम कब आए?"

उसने उत्तर दिया "मैं अभी बाज़ार से आया हूँ।" वह उदास लग रहा था। उसके चेहरे पर ग्लानि और अफसोस झलक रहा था।

हम सब एक साथ दाखिल हुए। घर की हालत बहुत ख़राब थी क्योंकि सतीश परिवार का एकमात्र कमानेवाला सदस्य था। "इतने दिनों तक उनका समर्थन किसने किया?" मैंने खुद से पूछा। तब मुझे एहसास हुआ कि यह हरिकृष्ण होना चाहिए।

जब हम कमरे में दाखिल हुए तो सतीश एक बिस्तर पर सो रहा था। हमारे प्रवेश से उसकी नींद खुल गई । उसने धीरे से अपनी आँखें खोली और हमारी ओर देखा। जब उसने मुझे देखा तो, उसने अपने शरीर में कुछ हरकत लाने की कौशिश की मानो वह बिस्तर पर बैठना चाहता हो। लेकिन मैंने उसे ऐसा करने से रोका। "नहीं, नहीं सतीश, तुम, जाओ। आराम करो।" मैंने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा। मैं बिस्तर के पास रखे एक मुरा पर बैठ गया और मैंने उससे फिर पूछा, "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है, सतीश?" उसने कुछ जवाब नहीं दिया। उसने अपनी आखें झुका लीं। उसकी आखों से निरंतर आँसू बहने लगे। "नहीं, नहीं सतीश, रोओ मत।" मैंने चादर के एक कोने से उसके आँसू पोछते हुए कहा। हम सब अपने आँसू दबा रहे थे। उसका चेहरा उसके शरीर की तुलना में बड़ा और अनुपातहीन दिखाई देता था। वह एक कंकाल मात्र था। उसने अपनी माँ की ओर देखा जैसे वह कुछ कहना चाहता हो। फिर उसने अपनी बहन और हरिकृष्ण की ओर आँखें घुमाई। यह देख मेरा पूरा खून जम गया। उसने मेरी ओर देखा। उसकी आखें भयभीत लग रही थी। मैंने कहा, "हाँ। सतीश! क्या आप कुछ कहना चाहते है?" मैंने उसके माथे को सहलाते हुए कहा, तभी अचानक उसके मुँह से खून की धारा निकल पड़ी। उसकी आखें सुन्न हो गई और झपकना बिल्कुल बंद हो गईं।

****

मनभावन

श्री सिद्धार्थ कुमार,
सुपुत्र श्री विजय कुमार, स.ले.अ.

शीतल मंद सुगंध पवन ही,
त्रिविध बयार कही जाती है।
नलिनी की मोहक सुवास भी,
गुबरैले को कब भाती है।

दुर्व्यसनों का वेग प्रबल हो,
तन में तामसता आती।
दुविचार आते ही मन में,
कुटिल लालसा बढ़ जाती है॥

पेट पीठ मिल एक हुए हैं,
नींद उसे फिर कब आती।
चिंताओं से मान व्याकुल हो,
नींद उसे फिर कब आती है।

क्षुधा पिपासा से पीड़ित को,
कथा कहानी कब भाती,
सावन कितना मनभावन हो,
कोयल कभी कहाँ गाती है॥

जिस पर कृपा करें जगदीश्वर,
सतसंगति मिल ही जाती है।
प्रभु चरणों में शरण मिले तो,
संसारिकता कब भाती है।

लकीरें

सुश्री प्रिया साव,
कनिष्ठ अनुवादक

खीचोगें लकीरें देखेगें तमाशा
खीचोगें लकीरें देखेगें तमाशा
तमाशा?
तमाशा खेल का?
नहीं नहीं खेल का नहीं
रूको, सुनो ज़रा
लकीरें खेल के मैदान
में खींची जाती है,
जहाँ खिलाड़ी खेलते हैं
हारते- जीतते है जमाना देखती है तमाशा।
क्या खींची गई लकीरें सही थी?
क्या तुम जानते हो मैं किस लकीर की बात कर रही हूँ नहीं ना।
सूनो मैं बताती हूँ।
ये वो लकीर नहीं जो,
क्रिकेट के मैदान में खींची गई
ये वो लकीर नहीं जो
फुटबाल के मैदान में खीची गई
ये वो लकीर नहीं जो बैडमींटन के कोर्ट में खींची गई
ये वो लकीर नहीं जो कबड्डी के खेल में खीची गई
यदि केवल यहीं खेल की लकीरें
होती तो अच्छा था।
जीत का जश्न होता,
हार का क्षण-भर गम होता।
खैर छोड़ो, आगे बढ़ते है,
ये वो भी लकीर नहीं,
जिस पर एक अभियंता, भवन निर्माण की बनावट तैयार करे,
फिर, यो लकीर?

ये लकीर?
ये वो लकीर है,
जिसने हमारे खेत बांटे।
ये वो लकीर है,
जिसने हमारे पंजाब के स्कूल बांटे।
ये वो लकीर है,
जिसने रेल की पटरियाँ बाँटी।
ये वो लकीर है,
जिसने नदियाँ बांटी।
ये वो लकीर है,
जिसने बेगम जान की हवेली तोड़ी।
ये वो लकीर है,
जिसने आग लगाई।
ये वो लकीर है,
जिसने दिलो दिमाग का बँटवारा किया।
ये वो लकीर है,
जिसने परिवार बांटे,
रिश्ते नाते बांटे,
ये वो लकीर है,
जिसने माँ को बांटे।
इस लकीर ने,
धरती माँ के हृदय को बाँटा।
इस पार को हिन्दुस्तान,
उस पार को पाकिस्तान बनाया।
जीता कोई भी नहीं
दो तरफी हार हुई।

मोहब्बत-ए-नौकरी

श्री सुरेन्द्र कुमार,
स्टेनोग्राफर

चाहे दिन होता है, चाहे रात होती है,
बंद करूँ या खोलूं तुम्हारी याद होती है।

लोग दुआ मांगते हैं दौलत और सोहरत की,
मेरी हर दुआ में बस चाह होती है।

मैं दो कदम चलता हूँ,
तुम चार कदम भागती हो।

कभी तो कदम से कदम मिला लो
क्यूँ इतना इतराती हो।

कभी तो मिलना होगा तुमसे ऐ नूर-ए-जहाँ,
बस यही सोच के हमारी शाम होती है।

अरे ठहरो, बैठो, दो पल सांस तो लो,
मेरे दिल में क्या हैं जरा झांक तो लो।

उम्र गुजर जाती है तुम्हे पाने के चक्कर में,
तुम्हे क्या पता, कितनों की जवानी तमाम होती है।

दलित आंदोलन में डॉ भीमराव अंबेडकर की भूमिका

सुश्री प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

आंदोलन का सीधा अर्थ है समकालीन व्यवस्था से असहमति और विद्रोह। सामाजिक आंदोलन किसी भी समाज में अलगाव तथा असमानता की परिस्थितियों के खिलाफ मानवीय प्रतिक्रिया स्वरूप निर्मित होते हैं।

किसी भी आंदोलन की भांति दलित आंदोलन भी सामाजिक होने के साथ राजनैतिक आंदोलन है जो कि आज के वर्तमान परिपेक्ष्य में एक ज्वलंत मुद्दा है। दलित आंदोलन के केंद्र में अंबेडकरवादी विचारधारा है। दलित आंदोलन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए इसकी प्रेरणा स्त्रोत और विकास प्रक्रिया को जानना भी जरूरी है। भारतीय इतिहास में दलितों की दासतां उतनी ही प्राचीन है जितनी कि भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही वर्चस्वशाली समुदायों ने कमजोर और शक्तिहीन वर्ग को गुलामी की बेड़ियों से जकड़कर उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रहने पर मजबूर कर दिया, ऐसे में समाज में वर्ग और वर्ण भेद की स्थिति ने दलितों को नारकीय जीवन में ढकेल दिया। शिक्षा और चेतना के अभाव में अपने अधिकारों से वंचित यह वर्ग इसे ईश्वरीय न्याय या देन समझ कर शोषण की चक्की में पिसते हुए जीवन यापन किए जा रहा था। इन्हें अपनी स्थिति से उबरने का कोई मार्ग नहीं मिल रहा था। ऐसे में गौतम बुद्ध के दार्शनिक और वैचारिक आधार ने वर्ण व्यवस्था को चुनौती दी। गौतम बुद्ध ही भारतीय इतिहास के प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने वर्ण व्यवस्था को अन्याय पूर्ण ठहराया।

सर्वप्रथम दलित आंदोलन महाराष्ट्र की धरती से उपजा लेकिन इसकी संवेदना एवम् स्वरूप राष्ट्रीय है। आधुनिक दलित आंदोलन के नायक डॉ बाबासाहेब आंबेडकर को माना जाता है साथ ही ज्योतिबा फूले और सावित्रीबाई फुले के वैचारिक आधार और सामाजिक सरोकारों ने इस आंदोलन को उत्प्रेरक शक्ति प्रदान की। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित मुक्ति आंदोलन को तीव्रतम गति प्रदान करने के लिए एक व्यवस्थित सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विकल्प दिया। साथ ही स्त्री, उपेक्षित और पिछड़े वर्ग के लिए मान सम्मान, गरिमा, सामाजिक प्रतिष्ठा, मौलिक अधिकार और न्याय व्यवस्था को सुनिश्चित किया।

बाबासाहेब अंबेडकर के भारतीय राजनीति में प्रवेश करने से पहले दलित आंदोलन ने भारत में सामाजिक परिवर्तन का जो परिवेश निर्मित किया, उसे दलितों के द्वारा सराहा गया, लेकिन सदियों से चली आ रही अमानवीय ब्राह्मण व्यवस्था पर न तो कोई व्यापक प्रभाव पड़ा था और न ही कोई क्रांतिकारी परिवर्तन ही देखने को मिला। हिन्दू समाज में ब्राह्मण के शोषण नीति को अंग्रेजों ने मजबूत और गतिशील बनाया। दलित इससे अनभिज्ञ थे। इन सब कुरीतियों के कुलों को तोड़ने तथा दलित समाज की सच्चाई से अवगत कराने के लिए डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने पत्रिकाओं का संपादन आरंभ किया। इन्होंने मूकनायक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन

किया जिसका प्रथम अंक 31 जनवरी 1920 को निकला। इसमें मनोगत शीर्षक से डॉ बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा लिखा गया आलेख जातीय और धार्मिक विषमता पर जोरदार प्रहार था। दलित आंदोलन को नई दिशा प्रदान करने के लिए उन्होंने 14 मार्च 1927 को बहिष्कृत भारत पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। इन पत्रिकाओं के जरिए उन्होंने दलितों की अस्मिता को उजागर करने के साथ-साथ हिन्दू धर्म की कमजोरियाँ तथा अस्पृश्यता के व्यवहार और जाति व्यवस्था पर करारा चोट किया।

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने 1920 ई. में बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की जो निष्क्रिय थी। दलित मुक्ति आंदोलन को और तीव्रतम रूप प्रदान करने तथा सरकार के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए अनेकों अछूत कार्यकर्ताओं ने विचार विमर्श करके इस सभा का जुलाई 1924 में पुनर्गठन करके नए प्राण फूके इस सभा का उद्देश्य था। दलितों में शिक्षा का प्रसार प्रचार करना, दलितों में संस्कृति के प्रसार के लिए पुस्तकालयों, सामाजिक केंद्रों एवम् अध्ययन मंडलों का संगठन तथा संचालन करना।

डॉ. अंबेडकर ने देश में अछूतों एवम् दलितों को कांग्रेस के बदलाव से दूर रखने के लिए स्वतंत्र राजनीतिक दल इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी का गठन किया। इस पार्टी के माध्यम से डॉ. अंबेडकर जी ने दलित पिछड़ों, भूमिहीनों, निर्धन किसानों, निर्धन खेतिहरों और श्रमिकों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करवाया। पार्टी ने पुराने उद्योगों के स्थान पर नए तकनीकी शिक्षा के विस्तार का प्रयास किया और 1957 ई. के चुनावों में इस पार्टी ने जीत भी हासिल की। सन् 1941 के समय अछूत रेलवे कर्मचारियों को संगठित करके ब्रिटिश सरकार ने पुलिस और सेनाओं में आरक्षण की मांग रखी गई। इस प्रकार श्रमिकों के आर्थिक विषय को भी अपने आदोलन में शामिल किया।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने धार्मिक आंदोलनों का पहला पड़ाव नासिक से शुरू किया था। नासिक के कलाराम मंदिर में अछूतों का प्रवेश निषिद्ध था। 2 मार्च सन् 1930 ई. को डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में अछूतों से नासिक के कालाराम मंदिर की ओर अपने कदम आगे बढ़ाया जिसके कारण सवर्णों और दलितों के बीच संघर्ष हुआ और मंदिर का प्रवेश द्वार अछूतों के लिए बंद कर दिया गया ताकि मंदिर अशुद्ध न हो जाए। उस समय यह आंदोलन असफल रहा, लेकिन तीन वर्षों बाद सन् 1933 ई. में कानूनी लड़ाई में जीत हासिल करने के बाद मंदिर का प्रवेश द्वार अछूतों के लिए खोल दिया गया। चावदार तालाब और कलाराम मंदिर आंदोलन की सफलता के बावजूद भी सामाजिक स्तर पर कोई विशेष प्रभाव और चेतना के स्तर पर कोई व्यापक परिवर्तन नहीं होता देख कर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने सन् 1929 में धर्मातरण की घोषणा कर दी। उन्होंने लगभग 27 सालों के लंबे अरसे तक चिंतन मनन करने के उपरांत अंत में 14 अक्टूबर 1956 को एक विशाल जनसभा में लाखों दलितों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस प्रकार डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने अपने प्रखर चेतना शील, प्रगतिशील विचारों को उच्चतम स्तर पर जाकर दलित उद्धार के लिए परिवर्तन करके वर्ण वादी हिन्दू धर्म को आघात पहुंचाया और जातिभेद से मुक्ति का एक नया मार्ग प्रस्तुत किया।

बूझो फिर बोलो

श्री राज्य पाल देवकोटा,
स.ले.अ..

कहानी-1 रात अंधेरी और खामोश थी। कहीं कोई नजर नहीं आ रहा था। एक अकेली आकृति एक पुरानी हवेली की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। अरे, यह मत सोचो कि यह कोई डरावनी कहानी है। वो अकेला इंसान हवेली का निवासी है जो इस विषम समय में कार्यालय से संबंधित दौरे से घर वापस आ रही थी और निःसंदेह हवेली उसके परिवार के सदस्यों से भरा हुआ था। अक्सर, जब भी कोई ऐसी चीज़ होती है, जिसे हम समझ नहीं पाते या देख नहीं पाते, तो हम उसे नकारात्मक नजरिए से देखते हैं। हम अपनी चेतना में कभी भी स्थिति को सकारात्मक रूप से नहीं समझते हैं।

कहानी-2. मैले-कुचैले कपड़ों में एक लड़की मैदान में ऐसे दौड़ रही थी मानो उसका जीवन इसी पर निर्भर हो। कुछ आदमी जोर-जोर से चिल्लाते हुए उसके पीछे थे। निश्चित रूप से वे गुंडे उस असहाय आत्मा के पीछे उसके जीवन को बेहतर बनाने के लिए नहीं बल्कि किसी विकृत उदेश्य के लिए थे। हालाँकि, तथ्य यह था कि लड़की मानसिक रूप से अस्थिर थी और आत्महत्या के लिए आमादा थी और पड़ोसी केवल गंभीर स्थिति को टालने की कोशिश कर रहे थे।

कहानी-3.कुछ समय पहले, मेरे एक मित्र ने 'संयुक्त रक्षा सेवा' परीक्षा में शामिल होने के दौरान हुई एक दिलचस्प परीक्षा के बारे में बताया।सभी अभ्यर्थियों को एक स्थिर चित्र दिखाया गया। तस्वीर में एक लड़की अपने बिस्तर पर रजाई से आधी ढकी हुई बैठी थी. एक लड़का कमरे की खिड़की से आधा अंदर और आधा बाहर (या तो अंदर आता हुआ या बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया। अभ्यर्थियों को चित्र की व्याख्या करते हुए एक छोटी सी कहानी लिखने का निर्देश दिया गया।लगभग सभी ने अपने-अपने तरीके से व्याख्या की, लेकिन सभी व्याख्याओं का सार यह था कि तस्वीर में दिख रहा लड़का, लड़की का प्रेमी था और दूसरे कमरे में शोर सुनकर जल्दी से खिड़की से बाहर निकल रहा था। सभी लोग परीक्षा में फेल हो गये। बताया गया कि लड़का, लड़की का भाई था और देर रात एक फिल्म शो से आ रहा था और अपने पिता के साथ टकराव से बचने के लिए बहन ने अपने कमरे की खिड़की से घर में प्रवेश करने में मदद की। यह बहुत ही सरल और नियमित घटना है।

उपरोक्त घटनाओं का सार यह है कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले, यदि संभव हो तो, कुछ भी टिप्पणी करने से पहले स्थिति का विश्लेषण करना बेहतर होगा, नहीं तो, मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है।

....0...

मन

राज्य पाल देवकोटा,
स.ले.अ.

हसरते हैं गगन चूमने की,
पंख फैलाने की देर है।
कौन सी नदी गहरी इतनी,
डूबने का डर ना हो मन में।

हाथ बढ़ाकर छू लूं सूरज,
इतना दूर भी नहीं तू दादा।
गर्मी से तेरा न घबराए मन,
क्रोधाग्नि से तो फिर भी तू है कम।

इतरा ना तू पवन वेग से,
मेरा मन तो और तेज भागे।
सर्र से कम्पन क्या पैदा करे,
जलती नयन से तो मन और कांपें।

सबल तो फिर काहे का डर,
इंद्रिय सभी का केंद्र है एक।
ढील दो तो जकड़ ले कोई एक,
काबू में सभी तो फिर काहे का डर।

....0..

अंतरद्वन्द

राज्य पाल देवकोटा,
स.ले.अ.

शिराओं में है गर्म लावा,
गर्मी असहनीय,
कुछ सुस्ता लूं,
धैर्य न खोना मुझे।

फुर्सत नहीं है मेरे पास,
एक युद्ध लड़ा जाना है।
तुम्हारे साथ नहीं तो,
अपने आप में खो जाना है।

अंतरद्वन्द है मन में,
न जानू क्या है अंत इसका।
ये अगन न बुझेगी जब तक,
शांति एक आस ही रहेगी तब तक।

....0..

सामाजिक अलगाव

ग्रेसी हातनेऊ वाईफेंई,

डी.ई.ओ.

सामाजिक अलगाव आम तौर पर एक ऐसी वारदात है, जिसका उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो एकांत में रहता है और जिसमें सामाजिक संबंधों की कमी होती है। सामाजिक अलगाव आमतौर पर अकेलेपन की ओर ले जाता है और अवसाद का एक प्रमुख कारण हो सकता है। हालाँकि ऐसे उदाहरण भी हो सकते हैं जहाँ कोई व्यक्ति सामाजिक रूप से अलग-थलग हुए बिना भी अकेलापन महसूस कर सकता है।

सामाजिक अलगाव और मानसिक स्वास्थ्य की घटनाएँ आज की समकालीन दुनिया में परस्पर संबंधित और बहुत व्यापक रूप से संबोधित विषय हैं। भारत के संदर्भ में, युवाओं (विशेषकर किशोरों) और कुछ वयस्कों में सामाजिक अलगाव आम होता जा रहा है। अपने ही कमरे में आराम से अलग-थलग रहने की चाहत और अपनी उम्र के लोगों के साथ बातचीत करने या दोस्त बनाने के लिए आगे आने से रोकने की प्रकृति आंशिक रूप से पश्चिमी देशों से प्रभावित जीवनशैली के कारण आती है। बच्चे का लगातार घर पर रहना माता-पिता या अभिभावकों को शुरुआती दौर में एक अच्छा व्यक्तित्व लक्षण लग सकता है; हालाँकि, जब यह प्रासंगिक हो जाता है तो धीरे-धीरे कम आत्मसम्मान, सामाजिक चिंता और अंततः अवसाद का कारण बनेगा। इसके अलावा, किसी प्रियजन की हानि या बीमारी, अलगाव, शारीरिक विकलांगता, वित्तीय अस्थिरता आदि भी संभावित कारक हैं जो सामाजिक अलगाव का कारण बन सकते हैं। अनुसंधान ने सामाजिक अलगाव और अकेलेपन को विभिन्न शारीरिक और मानसिक स्थितियों के लिए उच्च जोखिमों से जोड़ा है: उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मोटापा, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली, चिंता, अवसाद, संज्ञानात्मक गिरावट, अल्जाइमर रोग और यहां तक कि मृत्यु (प्राकृतिक या आत्महत्या) ।

सामाजिक अलगाव से जुड़ा एक शब्द है जिसे "कोडोडुशी" कहा जाता है, जो एकाकी मृत्यु के लिए एक जापानी घटना है, लोग अकेले मर जाते हैं और लंबे समय तक अनदेखा रहते हैं। पहली बार 1980 के दशक में वर्णित, पहला मामला जो जापान में राष्ट्रीय समाचार बना वह 2000 में था जब एक 69 वर्षीय व्यक्ति की लाश उसकी मृत्यु के तीन साल बाद खोजी गई थी; उसका मासिक किराया और उपयोगिताएँ उसके बैंक खाते से स्वचालित रूप से निकाल ली गई थीं और उसकी बचत समाप्त होने के बाद ही उसके घर पर उसका कंकाल खोजा गया था। शव को कीड़ों और भृंगों ने खा लिया था। कोडोकुशी जापान में एक बढ़ती हुई समस्या बन गई है, जिसका कारण आर्थिक परेशानियां और जापान की बढ़ती बुजुर्ग आबादी है। इसे कोरित्सुशी - "अलगाव मृत्यु", और डॉक्योशी - "अकेले जीवन जीना" के नाम से भी जाना जाता है।

विशेषकर कोविड महामारी के प्रकोप के बाद बुजुर्ग आबादी के अलावा युवा कामकाजी वयस्कों में भी अकेले मौतें आम हो गई हैं। जापान के अलावा, इस घटना को हांगकांग और दक्षिण कोरिया में चिंता के कारण के रूप में उजागर किया गया है। जापान की तरह, दोनों में उम्रदराज़ आबादी है और अकेले और अलग-थलग रहने वाले बुजुर्ग लोगों की संख्या बढ़ रही है। ऐसा माना जाता है कि भारत में भी अकेले मौत के ऐसे कई अनदेखे मामले और उदाहरण हो सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य, अवसाद, सामाजिक अलगाव, सामाजिक चिंता और आत्महत्या से असामयिक मौतों के बारे में बातचीत और अभियान आज मीडिया में व्यापक रूप से किए और प्रसारित किए जाते हैं। दुनिया भर में युवाओं और बूढ़ों को होने वाले जोखिम के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए उच्च मंचों पर प्रयास किए जा रहे हैं। हालाँकि, इस तरह की जागरूकता ज़मीनी स्तर पर - घरों में, परिवारों में दी जानी ज़रूरी है। भारत में वर्षों पहले, आज भी कुछ हिस्सों में, पारिवारिक स्तर पर यौन शिक्षा को हरक्यूलियन कार्य (अत्यन्त कठिन कार्य) माना जाता था। इसी तरह, परिवार के सदस्यों में मानसिक बीमारी के मामले या लक्षण किसी का ध्यान नहीं जाते या नज़रअंदाज हो जाते हैं। यह याद रखना अत्यावश्यक है कि सामाजिक अलगाव या अकेलेपन के एक मामूली संकेत को नजरअंदाज कर दिया जाना अंततः घातक हो सकता है।

....0...

जुनबिल मेला- पारंपरिक विनिमय प्रथा

सुश्री स्निग्धा फुकन
हिन्दी अधिकारी

जुनबिल मेला एक सदियों पुराना पारंपरिक मेला है, जो अपने आप में एक आश्चर्य है। जुनबिल मेला एक तीन दिवसीय वार्षिक स्वदेशी तिवा सामुदायिक मेला है, जो माघ बिहू के सप्ताहांत (जनवरी के मध्य) में प्रत्येक वर्ष पूर्वोत्तर राज्य असम के जुनबिल में दयांग बेलगुरी नामक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण स्थान पर आयोजित किया जाता है। यह असम के मोरीगांव जिले में है, जो जागीरोड से 3 किमी और गुवाहाटी से 32 किमी दूर है। मेले को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग NH 37 है। जुनबिल (जुन और बिल क्रमशः चंद्रमा और आर्द्रभूमि के लिए असमिया शब्द हैं) को ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह एक बड़े प्राकृतिक जल निकाय का आकार अर्धचंद्र जैसा होता है।

इस मेले का इतिहास 15वीं शताब्दी में आहोम राजाओं के समय का माना जाता है। लेकिन यह हमेशा से केवल मेला ही नहीं रहा है; बल्कि इसका आयोजन असम और पड़ोसी राज्य मेघालय के स्वदेशी आदिवासी समुदायों यथा- तिवा, कार्बी, खासी और जैंयतियाँ के राजाओं द्वारा बेलगुरी में राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए किया गया था।

इस ऐतिहासिक मेले की सबसे खास बात यह है कि इसने सामान खरीदने के साधन के रूप में प्राचीन समय की वस्तु विनिमय की प्रथा को अब तक जीवंत रखा है। इस तीन दिवसीय वार्षिक कार्यक्रम तिवा जनजाति के पारंपरिक राजा गोभा देवराजा के अधीन आयोजित किया जाता है, जो कभी इस परिक्षेत्र में शासन करता था। यह मेला असम के पारंपरिक फसल उत्सव माघ बिहू के अवसर पर आयोजित किया जाता है। इस मेले के साथ प्राचीन रीति-रिवाजों और प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला जुड़ी हुई है।

मेला लगने से पहले, मानवता की भलाई के लिए अग्नि पूजा की जाती है। जुनबिल मेला आर्द्रभूमि में सामुदायिक मछली पकड़ने के साथ प्रारंभ होता है। जुनबिल मेला पूर्वोत्तर भारत में फैले स्वदेशी असमिया समुदायों और जनजातियों के बीच सद्भाव और भाईचारा की एक झलक प्रस्तुत करता है। गोभा राजा (कोबा राजा उर्फ गोभा राजा) अपने दरबारियों के साथ मेले का दौरा करते हैं और अपनी प्रजा से कर इकट्ठा करते हैं। लोग अपने पारंपरिक नृत्य और संगीत का प्रदर्शन करते हैं, जिससे मेले का वातावरण और अधिक आनंदमय हो जाता है। यह मेला असम और मेघालय के सीमावर्ती गांवों में रहने वाले तिवा, कार्बी, राभा, खासी और जैंयतियाँ समुदायों के लोगों को बड़ी संख्या में आकर्षित करता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पड़ोसी राज्य मेघालय की खासी और जैंयतियाँ आदि विभिन्न पहाड़ी जनजाति के लोग और मैदानी इलाकों से उनके समकक्ष के मध्य बिना किसी पैसे की भागीदारी के सीधे उत्पादों का आदान-प्रदान करते हैं। इस मेला के दौरान बहुत सारी ताज़ी उपज और स्थानीय उत्पादन प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें कुछ सब्जियाँ भी शामिल हैं, जो व्यावसायिक रूप से शायद ही कभी

विक्रय की जाती हैं, लेकिन उनमें से कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है, जिसे पैसे से खरीदा जा सके। इसलिए इस मेले में, पहाड़ी लोग मसाले, जड़ी-बूटियाँ, अदरक और फल लाते है ताकि मैदानी लोगों द्वारा लाए गए सामान, जैसे चावल, मछली और पीठा से इनका आदान-प्रदान किया जा सके। अतः इस अनूठे मेले में वस्तु-विनिमय की सदियों पुरानी परंपरा अनायास ही जीवंत हो उठती है। इस मेले को पहाड़ी और मैदानी इलाकों के लोगों के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने का एक अवसर भी माना जाता है। तिवा, जिन्हें लालुंग के नाम से भी जाना जाता है, इस क्षेत्र के सबसे पुराने आदिवासी समुदायों में से एक हैं और ज्यादातर वे मध्य असम के मैदानी और पहाड़ी इलाकों के वासिंदा हैं। गाँव और कबीले स्तर के सामाजिक-राजनीतिक संगठनों के अतिरिक्त, राजा कहे जाने वाले प्रमुखों की अध्यक्षता में कुछ स्वशासी सामाजिक संस्थाओं का अस्तित्व भी इस जनजाति में पाया जाता है। मंत्रिपरिषद (दरबार) और पदाधिकारियों के साथ न्यायिक अधिकार से संपन्न समुदाय का पारंपरिक मुखिया होने के अतिरिक्त, इन सरदारों को अक्सर देवराजा माना जाता है, जिसका अर्थ है एक धार्मिक राजा या धर्म प्रमुख। जुनबिल मेले के अतिरिक्त, लोक रीति-रिवाजों, मान्यताओं, मौखिक इतिहास, किंवदंतियों, कलाकृतियों, त्योहारों, समारोहों, न्यायिक प्रक्रियाओं, प्रबंधन प्रणालियों और व्यापक नियमों सहित अन्य अमूर्त सांस्कृतिक तत्वों की एक विस्तृत श्रृंखला इन संस्थानों से जुड़ी हुई पाई जाती है। गोभा की राजशाही संस्था को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह प्राचीन काल में सर्वोपरि प्रांत हुआ करता था। जुनबिल मेला पहाड़ी और मैदानी इलाकों के समुदायों के मध्य व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए गोभा देवराजा के तहत आयोजित किया जाता है।

....0..

The Shillong Times

otal no of pages - 16
NI Regn No: 13759/57

ESTABLISHED 1945

Postal Regn. No. NE/749/2021-2023

SHILLONG, SUNDAY, OCTOBER 2, 2022 www.theshillongtimes.co

News Capsule

Programme

The Office of the Accountant General (Audit), Meghalaya, Office of the Accountant General (A&E), Meghalaya, and Regional Training Institute, Shillong, jointly celebrated the closing ceremony of 'Hindi Fortnight' in the city on September 29. According to a statement, the speakers in the programme highlighted the importance of Hindi language. "The main objective of organising Hindi Fortnight is to make non-Hindi speaking personnel proficient in Hindi language by organising various competitions relating to Hindi language," the statement said, adding that prizes were also given away to the winners of various Hindi competitions.

आपकी जुबान में आपके दिल की बात

सेंटिनल

संयुक्त रूप से मनाया गया हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह

PRATAH KHABAR, Guwahati, Saturday, 1 October, 2022

सच से समझौता नहीं

प्रातः खबर

राज्यभर में हिंदी पखवाड़े का सफल समापन

दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

1 October, 2022, dainikpurvodsy.com

A ROYAL GROUP PUBLICATION

मेघालय : हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह संयुक्त रूप से मनाया

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान महालेखाकार महोदया को पुष्प-गुच्छ से स्वागत करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022
के शुभ अवसर पर मंच संचालन करते हुए
श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक

हिन्दी अधिकारी, मुख्य अतिथि प्रधान महालेखाकार महोदया को
मेघालय की पांरपरिक शाल भेंट करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से करते हुए मुख्य अतिथि प्रधान महालेखाकार महोदया

वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय द्वारा दीप प्रज्जलवन

कल्याण अधिकारी महोदय द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन

वार्षिक गृह पत्रिका नवीन पूर्वाचल संदेश के
17 वें अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदया

समारोह की शोभा बढ़ाते हुए बालिका द्वारा
सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति

बालिका द्वारा पारंपरिक नृत्य की एक मनोरम झलक

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2023
में मुख्य अतिथि प्रधान महालेखाकार महोदया स्वअभिभाषण से
उपस्थित सभागार को अभिभूत करते हुए

विजयी प्रतियोगी को पुरस्कार प्रदान करते हुए
प्रधान महालेखाकार महोदया

विजयी प्रतियोगी को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए
प्रधान महालेखाकार महोदया

वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय द्वारी विजयी प्रतियोगी को
पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए

विजयी प्रतियोगी को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए उप
महालेखाकार महोदय की एक झलक

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह पर मंच का संचालन
करते हुए श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

कल्याण अधिकारी द्वारी प्रतियोगी को सांत्वना
पुरस्कार प्रदान करते हुए

पारम्परिक नृत्य प्रर्दशन करने वाली बालिका को भेंट
प्रदान करते हुए उप महालेखाकार महोदय

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2022 का समापन राष्ट्रीय
गान से सम्पन्न किया गया

शिलांग स्थित भारय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के राजभाषा संवर्ग

हस्तलेख प्रतियोगिता 2022
में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की एक झलक

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता 2022
में भाग लेने वाले प्रतिभागीगण की झलक

निबंध लेखन प्रतियोगिता 2022
में भाग लेने वाले प्रतिभागीवृंद की झलक

आशुभाषण प्रतियोगिता 2022 की झलक

जुलाई-सितम्बर 2022 के दौरान
आयोजित हिन्दी कार्यशाला के प्रतिभागीगण

अक्तूबर-दिसम्बर 2022 तिमाही के दौरान
हिन्दी कार्यशाला के प्रतिभागीगण

जनवरी-मार्च 2023 तिमाही के दौरान
आयोजित हिन्दी कार्यशाला के प्रतिभागीगण

अप्रैल-जुन 2023 तिमाही के दौरान आयोजित
हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागीगण

जुलाई-सितम्बर 2023 तिमाही के दौरान आयोजित हिन्दी
कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागीगण

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2023 के शुभ अवसर
पर ध्वजारोहण करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2023 के पावन अवसर पर स्लोगान
प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी प्रधान महालेखाकार महोदय के
कर कमलों द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए

स्वतंत्रता दिवस 2023 के समारोह पर वरिष्ठ
उप महालेखाकार द्वारा सांस्कृतिक नृत्यांगना को उपहार
भेंट करते हुए एक झलक

इस कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा
विभाग के अंतर श्रेत्रीय कैरम टूर्नामेंट का एक दृश्य

इस कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
के अंतर श्रेत्रीय कैरम टूर्नामेंट में पुरस्कार प्रदान करते हुए
वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय

आंतराष्ट्रीय योग दिवस 2023 में प्रतिभागिता करते हुए इस
कार्यालय के अधिकारी/ कर्मचारीगण

आंतराष्ट्रीय योग दिवस 2023 के शुभ अवसर
आयोजित स्लोगान प्रतियोगिता का एक दृश्य

योग दिवस हेतु इस कार्यालय द्वारा आयोजित चित्रांकण
प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते हुए
वरिश्ठ उप महालेखाकार महोदय

इस कार्यालय द्वारा आयोजित वार्षिक एक दिवसीय खेल कूद समारोह के विभिन्न झलक

एक दिवसीय खेल कूद समारोह मे विजेताओं
के पुरस्कृत करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय

एक दिवसीय खेलकूद समारोह मे विजेताओं के पुरस्कृत करते हुए
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के प्रशिक्षु अधिकारी
महोदय

दिनांक 14 सितम्बर 2023 को हिन्दी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे, महाराष्ट्र में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।